Pariksha Saathi — बिहार सामान्य ज्ञान नोट्स

1 टॉपिक • 11 पाठ • अपडेट 28 अक्टूबर 2026

ये नोट्स एक AI सहायक ने लिखे हैं - वही पाठ जो Pariksha Saathi ऐप में हैं। किसी विषय-विशेषज्ञ ने इनकी समीक्षा नहीं की है। ज़रूरी तथ्य आधिकारिक स्रोत या मानक पाठ्यपुस्तक से मिला लें। कोई गलती दिखे तो बताएँ: parikshasaathi.com/contact/

इन परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में शामिल बिहार सामान्य ज्ञान के टॉपिक: Bihar Police Constable, BPSC Prelims, BSSC Inter Level। हर टॉपिक के अंत में उसके मुफ़्त अभ्यास प्रश्नों का लिंक है; पूरे मॉक टेस्ट Pariksha Saathi ऐप और वेबसाइट पर मुफ़्त हैं।

विषय-सूची

बिहार सामान्य ज्ञान

दोहराव पत्रक

बिहार सामान्य ज्ञान

बिहार सामान्य ज्ञान

परीक्षा क्या पूछती है: बिहार सामान्य ज्ञान BPSC प्रारंभिक परीक्षा और बिहार पुलिस कांस्टेबल के प्रश्नपत्र का एक निश्चित भाग है। प्रश्न लगभग हमेशा तथ्यात्मक होते हैं: कोई स्थान, तिथि, संस्थापक, नदी या उपनाम। यह प्रश्नपत्र उन परीक्षार्थियों को लाभ देता है जो प्राचीन मगध की कथा भली-भाँति जानते हैं, नदियों और अभयारण्यों को मानचित्र पर रख सकते हैं और उन गिनी-चुनी संख्याओं (243, 75, 40, 16, 1912, 1916, 2000) को याद रखते हैं जो हर वर्ष बार-बार लौटती हैं।

प्राचीन इतिहास: मगध का पहला उत्थान बिम्बिसार और अजातशत्रु के हर्यंक वंश के अंतर्गत हुआ, जिसकी राजधानी पाँच पहाड़ियों से घिरा राजगृह (राजगीर) था। परंपरा के अनुसार उदयिन ने राजधानी को गंगा और सोन के संगम पर स्थित पाटलिपुत्र में स्थानांतरित किया; एनसीईआरटी इस स्थानांतरण को चौथी शताब्दी ई.पू. में बताती है। इसके बाद शिशुनाग, नंद (महापद्म से धनानंद तक) और फिर मौर्य आए; चंद्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य की सहायता से लगभग 321 ई.पू. में मौर्य साम्राज्य की स्थापना की, और मेगस्थनीज ने पाटलिपुत्र का वर्णन पालिबोथ्रा के रूप में किया। अशोक के काल की तृतीय बौद्ध संगीति पाटलिपुत्र में हुई, प्रथम संगीति अजातशत्रु के समय राजगीर में और द्वितीय कालाशोक के समय वैशाली में हुई थी। गुप्तों ने पुनः पाटलिपुत्र से शासन किया, कुमारगुप्त प्रथम ने नालंदा की स्थापना की, और आर्यभट ने 499 ई. में कुसुमपुर (पटना) में आर्यभटीय की रचना की। पालों ने विक्रमशिला (धर्मपाल) और ओदंतपुरी (गोपाल) जोड़े। बिहार निरंजना के तट पर बोधगया में बुद्ध की ज्ञान-प्राप्ति की तथा वैशाली के निकट (पारंपरिक मान्यता; सटीक स्थल विवादित है) महावीर के जन्म और पावापुरी में उनके निर्वाण की भूमि है।

मध्यकालीन और आधुनिक इतिहास: शेरशाह सूरी ने चौसा (1539) में हुमायूँ को हराया और वे सासाराम में एक झील के बीच बने मकबरे में दफन हैं। गुरु गोबिंद सिंह का जन्म 1666 में पटना में हुआ था। बक्सर के युद्ध (1764) के बाद मुगल सम्राट ने 1765 में कंपनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी प्रदान की। जगदीशपुर के कुँवर सिंह ने अस्सी वर्ष की आयु में 1857 के विद्रोह का नेतृत्व किया। बिहार और उड़ीसा 22 मार्च 1912 को एक पृथक प्रांत बने (बिहार दिवस); उड़ीसा 1936 में और झारखंड 15 नवंबर 2000 को अलग हुआ। गांधी जी का भारत में पहला सत्याग्रह 1917 में राजकुमार शुक्ल के आमंत्रण पर चंपारण में तिनकठिया प्रथा के विरुद्ध हुआ। बिहार विद्यापीठ (1921), पटना सचिवालय के भारत छोड़ो शहीद (11 अगस्त 1942), प्रथम मुख्यमंत्री श्री कृष्ण सिंह और जयप्रकाश नारायण की 1974 की संपूर्ण क्रांति आधुनिक क्रम को पूरा करते हैं।

भूगोल: बिहार स्थल-रुद्ध राज्य है, जिसकी सीमाएँ नेपाल, पश्चिम बंगाल, झारखंड और उत्तर प्रदेश से लगती हैं। गंगा चौसा में प्रवेश करती है और राज्य को नवीन जलोढ़ वाले उत्तर बिहार के मैदान और दक्षिण बिहार के मैदान में बाँटती है। उत्तरी सहायक नदियाँ हिमालयी नदियाँ कोसी, गंडक, बूढ़ी गंडक, बागमती, कमला और महानंदा हैं; दक्षिणी सहायक नदियाँ सोन, पुनपुन, फल्गु और किऊल हैं। कोसी, जो बार-बार अपना मार्ग बदलती रही है, बिहार का शोक कहलाती है; 2008 की बाढ़ नेपाल के कुसहा में तटबंध टूटने के बाद आई थी। हनुमान नगर का कोसी बराज, वाल्मीकिनगर का गंडक बराज और डेहरी-ऑन-सोन का सोन एनीकट मुख्य सिंचाई परियोजनाएँ हैं। दक्षिण-पश्चिम का कैमूर पठार विंध्याचल का विस्तार है; पश्चिम चंपारण की सोमेश्वर पहाड़ियों में राज्य का सर्वोच्च बिंदु है। संरक्षित क्षेत्रों में वाल्मीकि बाघ अभयारण्य (अब तक एकमात्र; कैमूर को दूसरे के रूप में सैद्धांतिक स्वीकृति मिल चुकी है), कैमूर (सबसे बड़ा वन्यजीव अभयारण्य), गर्म जलस्रोतों वाला भीमबांध, भागलपुर के निकट विक्रमशिला डॉल्फिन अभयारण्य और बेगूसराय की कांवर झील (कबरताल), बिहार का पहला रामसर स्थल (2020), शामिल हैं।

अर्थव्यवस्था: बिहार कृषि प्रधान राज्य है, जहाँ धान, गेहूँ, मक्का, गन्ना और जूट उगाए जाते हैं, और यह लीची (मुजफ्फरपुर की शाही लीची) तथा मखाना (मिथिला) में भारत में अग्रणी है। भागलपुर तसर रेशम बुनता है, सिलाव खाजा बनाता है, मधुबनी चित्रकारी के लिए जाना जाता है। उद्योग सीमित हैं: बेगूसराय में बरौनी रिफाइनरी और ताप विद्युत संयंत्र, मुंगेर में जमालपुर रेल कारखाना (1862) और बंदूक कारखाना, तथा कैमूर के चूना पत्थर से बनने वाला सीमेंट। रोहतास का अमझोर पाइराइट सबसे प्रसिद्ध खनिज है। जनगणना 2011 में लगभग 10.4 करोड़ लोग दर्ज हुए, जो तीसरी सबसे बड़ी जनसंख्या है; शहरीकरण के सबसे निचले स्तरों में से एक (लगभग 11 प्रतिशत; केवल हिमाचल प्रदेश इससे कम है) और जनसंख्या घनत्व राज्यों में सबसे अधिक है।

राजव्यवस्था: विधानमंडल द्विसदनीय है, जिसमें 243 सदस्यीय विधान सभा और 75 सदस्यीय विधान परिषद है। बिहार लोक सभा में 40 और राज्य सभा में 16 सदस्य भेजता है। पटना उच्च न्यायालय की स्थापना 1916 में हुई। बिहार पंचायत राज अधिनियम 2006 ने बिहार को पंचायतों की आधी सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित करने वाला पहला राज्य बनाया। जयरामदास दौलतराम स्वतंत्रता के बाद पहले राज्यपाल थे।

संस्कृति: राज्य पक्षी गौरैया और राज्य वृक्ष पीपल है; राज्य पशु (गौर या बैल) और राज्य पुष्प (गेंदा या कचनार) के बारे में स्रोतों में मतभेद है। कार्तिक शुक्ल षष्ठी को छठ, कार्तिक पूर्णिमा को सोनपुर का पशु मेला, गया का पितृपक्ष मेला, मिथिला का सामा-चकेवा और अंग क्षेत्र का बिहुला प्रमुख पर्व-मेले हैं। लोक विधाओं में भिखारी ठाकुर का बिदेसिया, जट-जटिन, झिझिया और डोमकच शामिल हैं; शिल्पों में मधुबनी चित्रकला, भागलपुर की मंजूषा कला, मुजफ्फरपुर की सुजनी कढ़ाई और सिक्की घास का काम आते हैं। मैथिली 2003 में आठवीं अनुसूची में शामिल हुई; भोजपुरी, मगही, अंगिका और बज्जिका क्षेत्रीय भाषाएँ बनी हुई हैं। विद्यापति, दिनकर, रेणु, नागार्जुन और राहुल सांकृत्यायन जानने योग्य साहित्यिक नाम हैं।

जाल (ट्रैप): चौसा (1539) को कन्नौज (1540) से, महावीर की पारंपरिक जन्मभूमि (वैशाली के निकट कुंडग्राम; अन्य स्थलों का भी दावा किया जाता है) को उनके निर्वाण स्थल (पावापुरी) से, नालंदा के संस्थापक (कुमारगुप्त प्रथम) को विक्रमशिला के संस्थापक (धर्मपाल) से, कोसी बराज (हनुमान नगर) को गंडक बराज (वाल्मीकिनगर) से, या यूनेस्को की दो तिथियों (महाबोधि 2002, नालंदा 2016) को आपस में न मिलाएँ। याद रखें कि मोतिहारी में जन्म किप्लिंग का नहीं, ऑरवेल का हुआ था, और सिताबदियारा जेपी का गाँव है जबकि जीरादेई राजेंद्र प्रसाद का।

उदाहरण

- मगध की राजधानियाँ क्रम से: बिम्बिसार के अधीन राजगृह (गिरिव्रज), फिर पाटलिपुत्र (परंपरा के अनुसार उदयिन से); चंपा अंग की राजधानी थी, मगध की नहीं।
- बौद्ध संगीतियों का सूत्र रा-वै-पा: प्रथम राजगीर (अजातशत्रु), द्वितीय वैशाली (कालाशोक), तृतीय पाटलिपुत्र (अशोक)।
- संस्थापक युग्म: नालंदा = कुमारगुप्त प्रथम (गुप्त); विक्रमशिला = धर्मपाल (पाल); ओदंतपुरी = गोपाल (पाल; तिब्बती परंपराओं में मतभेद है)।
- शेरशाह ने हुमायूँ को दो बार हराया: चौसा 1539 (बिहार, बक्सर जिला) और कन्नौज/बिलग्राम 1540 (उत्तर प्रदेश); उनका मकबरा सासाराम में झील के बीच है।
- राज्य-गठन की तीन तिथियाँ: 22 मार्च 1912 बिहार और उड़ीसा प्रांत; 1 अप्रैल 1936 उड़ीसा अलग; 15 नवंबर 2000 झारखंड अलग।
- चंपारण 1917: राजकुमार शुक्ल के आमंत्रण पर, तिनकठिया प्रथा (हर 20 कठे में 3 कठे में नील) के विरुद्ध, 1918 के चंपारण कृषि अधिनियम से समाप्त।
- बराज: कोसी हनुमान नगर/भीमनगर (1954 समझौता), गंडक वाल्मीकिनगर (1959 समझौता), सोन इंद्रपुरी में, पुराना एनीकट डेहरी-ऑन-सोन (1874) में।
- संरक्षित क्षेत्रों में प्रथम: वाल्मीकि (पश्चिम चंपारण) अब तक एकमात्र बाघ अभयारण्य (कैमूर को दूसरे के रूप में सैद्धांतिक स्वीकृति मिली है), कैमूर सबसे बड़ा अभयारण्य, विक्रमशिला (भागलपुर) भारत का एकमात्र डॉल्फ़िन अभयारण्य, कांवर झील (बेगूसराय) बिहार का पहला रामसर स्थल (2020)।
- विधानमंडल की संख्याएँ: विधान सभा 243, विधान परिषद 75, लोक सभा 40, राज्य सभा 16; पटना उच्च न्यायालय 1916।
- उपनाम: बिहार केसरी = श्री कृष्ण सिंह; बिहार विभूति = अनुग्रह नारायण सिन्हा; लोकनायक = जेपी; जननायक = कर्पूरी ठाकुर; राष्ट्रकवि = दिनकर; मैथिल कोकिल = विद्यापति; माउंटेन मैन = दशरथ मांझी।
- राज्य प्रतीक: पक्षी गौरैया, वृक्ष पीपल (पशु, गौर या बैल, और पुष्प, गेंदा या कचनार, के बारे में स्रोतों में मतभेद है); राज्य चिह्न में बोधि वृक्ष है।
- बिहार में यूनेस्को: महाबोधि मंदिर, बोधगया (2002) और नालंदा महाविहार के खंडहर (2016); बराबर की गुफाएँ (जहानाबाद) भारत की सबसे प्राचीन चट्टान-कटी गुफाएँ हैं।

त्वरित दोहराव: मगध की राजधानियाँ राजगृह फिर पाटलिपुत्र (उदयिन); बौद्ध संगीतियाँ राजगीर-वैशाली-पाटलिपुत्र; नालंदा कुमारगुप्त प्रथम, विक्रमशिला धर्मपाल; महावीर निर्वाण पावापुरी; चौसा 1539, सासाराम मकबरा; बिहार प्रांत 22 मार्च 1912, झारखंड 15 नवंबर 2000; चंपारण 1917, राजकुमार शुक्ल; कोसी = बिहार का शोक, बराज हनुमान नगर; गंडक बराज वाल्मीकिनगर; वाल्मीकि एकमात्र बाघ अभयारण्य; कांवर झील बेगूसराय रामसर; विधान सभा 243, परिषद 75, लोक सभा 40, राज्य सभा 16; पटना उच्च न्यायालय 1916; पंचायतों में महिलाओं को 50% 2006; महाबोधि यूनेस्को 2002, नालंदा 2016; मैथिली आठवीं अनुसूची 2003।

प्राचीन बिहार: चिरांद से मगध, नालंदा और पाल वंश तक

प्रारंभिक बस्तियाँ: बिहार की मानव-कथा लिखित अभिलेखों से बहुत पहले शुरू होती है। परीक्षाओं में सबसे अधिक पूछा जाने वाला स्थल सारण जिले का चिरांद है, जो गंगा के उत्तरी तट पर उस स्थान के निकट है जहाँ घाघरा उससे मिलती है। यहाँ की खुदाई में एक नवपाषाणकालीन गाँव मिला, जो हड्डी और हिरण के सींग से बने औज़ारों के लिए प्रसिद्ध है; इसके बाद काले-लाल मृद्भांड वाले ताम्रपाषाणकालीन (ताँबा-पत्थर युग के) स्तर मिले। रोहतास जिले का सेनुवार और बोधगया के महाबोधि मंदिर के निकट ताराडीह अन्य प्रारंभिक कृषक बस्तियाँ हैं।

वैदिक संदर्भ: प्रारंभिक वैदिक लोग बहुत पश्चिम में रहते थे और उनके ग्रंथ पूर्व को दूर का प्रदेश मानते हैं। ऋग्वेद में कीकटों का, जिन्हें बाद में मगध से जोड़ा गया, और उनके प्रमुख प्रमगंद का उल्लेख अप्रिय शब्दों में है, और अथर्ववेद अंग और मगध के लोगों को उन दूरस्थ जनों में गिनाता है जिनके पास ज्वर भेज देने की कामना की गई है। शतपथ ब्राह्मण बताता है कि विदेघ माथव अपने पुरोहित गोतम राहूगण के साथ पवित्र अग्नि को पूर्व की ओर सदानीरा (जिसे प्रायः गंडक माना जाता है) के पार ले गए और विदेह को बसाया। मिथिला राजधानी वाला विदेह राजा जनक के लिए प्रसिद्ध हुआ, जिनके दरबार में ऋषि याज्ञवल्क्य ने गार्गी सहित अनेक विद्वानों से शास्त्रार्थ किया, जैसा कि बृहदारण्यक उपनिषद में वर्णित है।

महाजनपद और वज्जि गणराज्य: 6ठी शताब्दी ई.पू. के लिए बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय 16 महाजनपदों की सूची देता है, जिनमें से तीन वर्तमान बिहार में थे: भागलपुर के निकट चंपा राजधानी वाला अंग, गिरिव्रज या राजगृह राजधानी वाला मगध, और वैशाली राजधानी वाला वज्जि संघ। वज्जि एक गण-संघ था, यानी लिच्छवियों के नेतृत्व में 8 कुलों का संघ, जिसमें कुल-प्रमुखों की सभा निर्णय लेती थी; इसी कारण वैशाली को प्रायः विश्व के प्राचीनतम गणराज्यों में

गिना जाता है। बुद्ध ने वज्जियों की कल्याण की सात शर्तों (सात अपरिहानीय धर्म) के लिए प्रशंसा की, जैसे बार-बार सभा में मिलना और वृद्धों व स्त्रियों का सम्मान करना। वैशाली गणिका आम्रपाली का भी नगर था, जिसने बुद्ध को आम्रवन दान किया, और यहीं बौद्ध भिक्षुणी संघ की स्थापना हुई।

मगध का उदय: मगध अपने भूगोल के कारण भारत का पहला महान साम्राज्य बना: उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी, व्यापार और रक्षा के लिए गंगा और सोन, दक्षिणी पहाड़ियों में लौह अयस्क, वनों से हाथी, और पहाड़ियों व नदियों से सुरक्षित राजधानियाँ। हर्यक वंश का राजा बिंबिसार कोसल, लिच्छवियों और मद्र के साथ वैवाहिक संबंधों से शक्तिशाली हुआ और उसने अंग को अपने राज्य में मिला लिया। उसके पुत्र अजातशत्रु ने अपने मंत्री वस्सकार के माध्यम से वज्जियों में फूट डालकर लंबे युद्ध के बाद उन्हें जीता और गंगा तट पर पाटलिग्राम में एक दुर्ग बनवाया। परंपरा उदायिन को पाटलिपुत्र (कुसुमपुर) बसाने और राजधानी वहाँ ले जाने का श्रेय देती है। शिशुनाग ने अवंति की शक्ति नष्ट की, और उसके पुत्र कालाशोक (काकवर्ण) के संरक्षण में वैशाली में द्वितीय बौद्ध संगीति हुई। इसके बाद नंदों ने गैर-क्षत्रिय वंश के अधीन पहला साम्राज्य बनाया: महापद्म नंद ने एकराट और सर्वक्षत्रांतक की उपाधियाँ लीं, और कहा जाता है कि धननंद की सेना की ख्याति ने 326 ई.पू. में ब्यास नदी पर सिकंदर के सैनिकों का मनोबल तोड़ दिया।

पाटलिपुत्र में मौर्य और गुप्त: चाणक्य (कौटिल्य) के मार्गदर्शन में चंद्रगुप्त मौर्य ने लगभग 321 ई.पू. में धननंद को सत्ता से हटाया। सेल्यूकस निकेटर के राजदूत मेगस्थनीज ने अपनी इंडिका में पालिबोथ्रा (पाटलिपुत्र) को लकड़ी की दीवार से घिरा नगर बताया, जिसमें 570 बुर्ज और 64 द्वार थे और जिसका प्रबंध 30 सदस्यों की समिति करती थी। अशोक (लगभग 268-232 ई.पू.) ने मोग्गलिपुत्त तिस्स की अध्यक्षता में पाटलिपुत्र में तृतीय बौद्ध संगीति आयोजित की, बराबर की गुफाएँ आजीवकों को दान कीं, और लौरिया नंदनगढ़, लौरिया अरेराज, रामपुरवा तथा वैशाली (कोल्हुआ) में स्तंभ खड़े किए। बाद में इसी क्षेत्र में गुप्तों का उदय हुआ: चंद्रगुप्त प्रथम ने लिच्छवि राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया, और उसके पुत्र समुद्रगुप्त ने गर्व से स्वयं को लिच्छवि-दौहित्र, अर्थात लिच्छवियों की पुत्री का पुत्र, कहा। चीनी यात्री फाह्यान ने चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में पाटलिपुत्र में अशोक के महल की प्रशंसा की, और आर्यभट ने 499 ई. में कुसुमपुर में आर्यभटीय की रचना की।

बुद्ध और महावीर की भूमि: सिद्धार्थ गौतम को उरुवेला, आज के बोधगया, में निरंजना नदी के तट पर पीपल वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ। राजगीर में बिंबिसार ने उन्हें वेणुवन (बाँस का उपवन) दान किया, और वे प्रायः गृध्रकूट (गिद्धों की चोटी) पर उपदेश देते थे; उनके देहावसान के बाद राजगीर की सप्तपर्णी गुफा में महाकस्सप की अध्यक्षता और अजातशत्रु के संरक्षण में प्रथम बौद्ध संगीति हुई। 24वें तीर्थंकर महावीर का जन्म परंपरा के अनुसार वैशाली के निकट कुंडग्राम में ज्ञातृक कुल के सिद्धार्थ और लिच्छवि राजकुमारी त्रिशला के घर हुआ, और उन्होंने नालंदा जिले के पावापुरी में निर्वाण प्राप्त किया, जहाँ कमल-सरोवर के बीच जल मंदिर स्थित है। प्रथम जैन संगीति चंद्रगुप्त मौर्य के समय के आसपास स्थूलभद्र की अध्यक्षता में पाटलिपुत्र में हुई।

विश्वविद्यालय और पाल वंश: 5वीं शताब्दी ई. में कुमारगुप्त प्रथम द्वारा स्थापित नालंदा एक आवासीय विश्वविद्यालय बना, जहाँ चीन, कोरिया, तिब्बत और दक्षिण-पूर्व एशिया से विद्यार्थी आते थे; 7वीं शताब्दी में ह्वेनसांग ने यहाँ आचार्य शीलभद्र से शिक्षा पाई, और उसके कुछ ही समय बाद इत्सिंग आया। पाल वंश की स्थापना लगभग 750 ई. में गोपाल ने की, जब परंपरा के अनुसार जनता ने अराजकता (मात्स्यन्याय) समाप्त करने के लिए उसे चुना। धर्मपाल ने भागलपुर जिले के अंतीचक में विक्रमशिला की स्थापना की, और बिहारशरीफ स्थित ओदंतपुरी का श्रेय परंपरा से गोपाल को दिया जाता है। विक्रमशिला के आचार्य अतीश दीपंकर बौद्ध शिक्षा को तिब्बत ले गए। ये महाविहार 12वीं शताब्दी के अंत में तुर्क आक्रमणों में नष्ट हो गए।

उदाहरण

- चिरांद (सारण जिला, घाघरा और गंगा के संगम के निकट): हड्डी और सींग के औज़ारों के लिए प्रसिद्ध नवपाषाणकालीन स्थल, जिसमें बाद के ताम्रपाषाणकालीन स्तर भी हैं।
- बिहार के तीन महाजनपद: अंग (राजधानी चंपा, भागलपुर के निकट), मगध (गिरिव्रज या राजगृह) और वज्जि (वैशाली); अंगुत्तर निकाय में कुल 16 महाजनपद गिनाए गए हैं।
- वज्जि: लिच्छवियों के नेतृत्व में 8 कुलों का संघ, राजधानी वैशाली; इसे प्रायः विश्व के प्राचीनतम गणराज्यों में गिना जाता है।
- मगध के राजवंश क्रम से: हर्यक (बिंबिसार, अजातशत्रु, उदायिन), शिशुनाग (शिशुनाग, कालाशोक), नंद (महापद्म, धननंद), फिर मौर्य।
- शतपथ ब्राह्मण: विदेघ माथव पवित्र अग्नि को सदानीरा (गंडक) के पार पूर्व ले गए और विदेह बसाया, जिसकी राजधानी मिथिला पर राजा जनक का शासन था।
- मेगस्थनीज की इंडिका: पाटलिपुत्र (पालिबोथ्रा) की लकड़ी की दीवार में 570 बुर्ज और 64 द्वार थे और नगर का प्रबंध 30 सदस्यों की समिति करती थी।
- गुप्त-लिच्छवि संबंध: चंद्रगुप्त प्रथम ने लिच्छवि राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया; समुद्रगुप्त ने स्वयं को लिच्छवि-दौहित्र कहा।
- महावीर: जन्म वैशाली के निकट कुंडग्राम में (परंपरा), माता त्रिशला लिच्छवि राजकुमारी, निर्वाण पावापुरी (जल मंदिर) में; प्रथम जैन संगीति पाटलिपुत्र में स्थूलभद्र की अध्यक्षता में।
- पाल वंश की स्थापनाएँ: विक्रमशिला (अंतीचक, भागलपुर) धर्मपाल द्वारा; ओदंतपुरी (बिहारशरीफ) परंपरा से गोपाल द्वारा; विक्रमशिला के अतीश दीपंकर तिब्बत गए।

> **त्वरित दोहराव:** चिरांद (सारण) में नवपाषाणकालीन हड्डी के औज़ार; ऋग्वेद में कीकट; विदेघ माथव ने सदानीरा पार की; मिथिला के जनक; महाजनपद अंग (चंपा), मगध (राजगृह), वज्जि (वैशाली, 8 कुल, लिच्छवि); हर्यक-शिशुनाग-नंद-मौर्य; पाटलिपुत्र उदायिन द्वारा; मेगस्थनीज 570 बुर्ज, 64 द्वार; अशोक के समय तृतीय संगीति; कुमारदेवी; महावीर का निर्वाण पावापुरी; नालंदा कुमारगुप्त प्रथम द्वारा; विक्रमशिला धर्मपाल द्वारा।

मध्यकालीन बिहार: बख्तियार खिलजी, शेरशाह सूरी और बक्सर का युद्ध

बख्तियार खिलजी और बिहार नाम की उत्पत्ति: लगभग 1200 ई. में गोरी की विजयों से जुड़े तुर्क सेनापति इख्तियारुद्दीन मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी ने दक्षिण बिहार पर धावा बोला। मिनहाज-उस-सिराज की तबकात-ए-नासिरी बताती है कि उसके सैनिकों ने जिसे किला समझकर हमला किया, वहाँ के मुंडित सिर वाले निवासियों को मार डाला, और बाद में पता चला कि वह एक विहार, अर्थात बौद्ध मठ, था, जिसे सामान्यतः ओदंतपुरी माना जाता है। इस क्षेत्र में

विहारों की अधिकता के कारण तुर्कों ने इसे बिहार कहा, और आज बिहारशरीफ के नाम से प्रसिद्ध नगर उनका मुख्यालय बना; बाद में यह नाम पूरे प्रांत के लिए प्रयुक्त होने लगा। पारंपरिक विवरण के अनुसार इन्हीं आक्रमणों में नालंदा और विक्रमशिला भी लूटे गए। बख्तियार ने आगे बंगाल के लक्ष्मण सेन से नदिया छीना और लखनौती को अपना केंद्र बनाया, किंतु तिब्बत की ओर विनाशकारी अभियान के बाद 1206 में उसकी मृत्यु हो गई।

दिल्ली और बंगाल के बीच: अगली तीन शताब्दियों तक दक्षिण बिहार दिल्ली के सुल्तानों और बंगाल के शासकों के बीच संघर्ष का सीमांत प्रदेश रहा, जबकि उत्तर में मिथिला (तिरहुत) में अपने हिंदू राजवंश बने रहे। 1097 में नान्यदेव द्वारा स्थापित कर्नाट वंश ने मिथिला पर तब तक शासन किया, जब तक 1324-25 के गयासुद्दीन तुगलक के आक्रमण ने हरिसिंहदेव को नेपाल भागने पर विवश नहीं कर दिया; इसके बाद आए ओइनवार वंश ने कवि विद्यापति को संरक्षण दिया। 15वीं शताब्दी में जौनपुर के शर्की सुल्तानों ने बिहार के कुछ भागों पर अधिकार रखा, जब तक कि लोदियों ने उसे नहीं ले लिया। सूफ़ी मत की जड़ें भी जमीं: फिरदौसी सिलसिले के मखदूम शरफुद्दीन अहमद याह्या मनेरी, जिनके पत्र (मक्तूबात) सूफ़ी साहित्य की श्रेष्ठ कृतियाँ हैं, बिहारशरीफ में रहे और वहीं 1381 में उनका निधन हुआ; पटना के निकट मनेर आज भी एक प्रमुख सूफ़ी केंद्र है।

सासाराम का अफ़गान शेरशाह सूरी: हसन खाँ सूर का पुत्र फरीद अपने पिता की सासाराम और ख्वासपुर की जागीर में पला-बढ़ा। उसने बिहार के अफ़गान शासक बहार खाँ लोहानी की सेवा की, जिसने बाघ मारने पर उसे शेर खाँ की उपाधि दी, और बहार खाँ के अल्पवयस्क पुत्र के संरक्षक के रूप में वह बिहार का वास्तविक शासक बन गया। हुमायूँ की कठिनाइयों का लाभ उठाकर उसने रोहतासगढ़ का मज़बूत पहाड़ी किला हस्तगत किया, 1539 में बक्सर के निकट गंगा तट पर चौसा में हुमायूँ को हराया, स्वयं को शेरशाह घोषित किया, और 1540 में कन्नौज (बिलग्राम) के युद्ध के बाद हुमायूँ को भारत से बाहर खदेड़ दिया। 1545 में कालिंजर के किले की घेराबंदी के दौरान बारूद के विस्फोट से उसकी मृत्यु हुई।

शेरशाह का प्रशासन: केवल पाँच वर्षों में शेरशाह ने ऐसी व्यवस्था दी जिसे मुगलों ने अपनाया। साम्राज्य सरकारों और परगनों में बँटा था; परगने में कानून-व्यवस्था के लिए शिकदार, भू-राजस्व के लिए अमीन, भूमि-अभिलेखों के लिए कानूनगो और खजांची के रूप में फोतदार होता था। भूमि की माप कराई गई और राज्य का हिस्सा उपज का एक-तिहाई तय किया गया, जिसे किसान को दिए गए पट्टे और उसके द्वारा हस्ताक्षरित कबूलियत में दर्ज किया जाता था। उसने चाँदी का रुपया और ताँबे का दाम चलाया, जो आज के रुपये के पूर्वज हैं; बंगाल के सोनारगाँव से उत्तर-पश्चिम तक जाने वाली महान सड़क (बाद की ग्रैंड ट्रंक रोड) का पुनर्निर्माण कराया, नियमित पड़ावों पर सराय बनवाईं और इन सरायों को घुड़सवार डाक की चौकियों के रूप में प्रयोग किया। 1541 में उसने पटना में किला बनवाया और बिहारशरीफ के स्थान पर पटना को प्रांतीय मुख्यालय बनाया। सासाराम में कृत्रिम झील के बीच से उठता उसका अष्टकोणीय लाल बलुआ पत्थर का मकबरा भारतीय-अफ़गान स्थापत्य की उत्कृष्ट कृति है; उसके पिता हसन खाँ का मकबरा भी सासाराम में है।

मुगलों के अधीन बिहार: अकबर ने 1574 में अफ़गान शासक दाऊद खाँ कर्रानी से पटना जीता, और 1580 में अकबर द्वारा साम्राज्य के विभाजन में बिहार मूल बारह सूबों में से एक बना, जिसकी राजधानी पटना थी; राजा मानसिंह इसके सूबेदारों में से एक थे। 1704 में औरंगज़ेब के पोते सूबेदार अज़ीम-उश-शान ने पटना का नाम अज़ीमाबाद रखा। 18वीं शताब्दी में मुगल शक्ति के पतन के साथ बिहार पर बंगाल की नवाबी के अंग के रूप में पटना स्थित नायब नाज़िम (उप-सूबेदार) के माध्यम से शासन होने लगा; अलीवर्दी खाँ 1740 में बंगाल का नवाब बनने से पहले इसी पद पर थे। बंगाल, बिहार और उड़ीसा जैसे प्रचलित पद की उत्पत्ति यहीं से है।

सिख संबंध: गुरु नानक और गुरु तेग बहादुर दोनों इस क्षेत्र में आए, और दसवें सिख गुरु, गुरु गोबिंद सिंह का जन्म 1666 में पटना में हुआ। तख्त श्री हरमंदिर जी पटना साहिब उनके जन्मस्थान पर स्थित है और सिख धर्म के पाँच तख्तों, अर्थात धार्मिक सत्ता के आसनों, में से एक है; 1934 के भूकंप में पुराने गुरुद्वारे के क्षतिग्रस्त होने के बाद वर्तमान भवन बनाया गया।

अंग्रेज़ और बक्सर का युद्ध: 17वीं शताब्दी में यूरोपीय व्यापारी शोरा (बारूद में प्रयुक्त), अफ़ीम, चीनी और कपड़े के लिए पटना आए; अंग्रेज़ों ने जल्द ही यहाँ अपनी कोठी (फैक्टरी) स्थापित की। प्लासी (1757) के बाद 1760 में बंगाल का नवाब बनाए गए मीर कासिम ने अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद से मुंगेर स्थानांतरित की, वहाँ हथियारों का कारखाना लगाया और कंपनी के कर-मुक्त निजी व्यापार को लेकर उससे टकराव मोल लिया। 1763 में पराजित होने पर उसने पटना में अंग्रेज़ बंदियों की हत्या करवाई और अवध भाग गया। 22 अक्टूबर 1764 को बक्सर में मेजर हेक्टर मुनरो ने मीर कासिम, अवध के शुजाउद्दौला और मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय की संयुक्त सेनाओं को हराया। इलाहाबाद की संधि (1765) द्वारा शाह आलम ने कंपनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी, अर्थात राजस्व वसूलने का अधिकार, प्रदान की। क्लाइव के द्वैध शासन में राजा शिताब राय बिहार के नायब दीवान रहे, और 1793 में बिहार कॉर्नवालिस के स्थायी बंदोबस्त के अंतर्गत आ गया।

उदाहरण

- बख्तियार खिलजी ने लगभग 1200 ई. में दक्षिण बिहार पर धावा बोला; मिनहाज-उस-सिराज की तबकात-ए-नासिरी में किला समझकर एक विहार पर किए गए उसके हमले का वर्णन है; इस विहार को सामान्यतः ओदंतपुरी माना जाता है।
- बिहार नाम विहार (बौद्ध मठ) से बना; बिहारशरीफ इस प्रांत में तुर्कों का पहला मुख्यालय था।
- मिथिला के राजवंश: कर्नाट (1097 में नान्यदेव द्वारा स्थापित, 1324-25 के गयासुद्दीन तुगलक के आक्रमण से समाप्त) और ओइनवार (विद्यापति के संरक्षक)।
- बिहार के सूफ़ी संत: फिरदौसी सिलसिले के मखदूम शरफुद्दीन अहमद याह्या मनेरी, मक्तूबात के रचयिता, जिनका 1381 में बिहारशरीफ में निधन हुआ।
- शेरशाह का जीवन-क्रम: बहार खाँ लोहानी से शेर खाँ की उपाधि; रोहतासगढ़ पर अधिकार; चौसा 1539; कन्नौज (बिलग्राम) 1540; कालिंजर में मृत्यु 1545; सासाराम में झील के बीच मकबरा।
- शेरशाह के सुधार: सरकार और परगना; शिकदार, अमीन, कानूनगो, फोतदार; पट्टा और कबूलियत; चाँदी का रुपया और ताँबे का दाम; सोनारगाँव वाली सड़क (बाद में ग्रैंड ट्रंक रोड) और सराय।
- पटना: 1541 में शेरशाह ने किला बनवाया; 1580 से मुगल सूबा बिहार की राजधानी; 1704 में औरंगज़ेब के पोते अज़ीम-उश-शान ने इसका नाम अज़ीमाबाद रखा।

- दसवें सिख गुरु गुरु गोबिंद सिंह का जन्म 1666 में पटना में हुआ; तख्त श्री हरमंदिर जी पटना साहिब पाँच तख्तों में से एक है।
- मीर कासिम ने अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद से मुंगेर स्थानांतरित की और वहाँ हथियारों का कारखाना लगाया।
- बक्सर का युद्ध, 22 अक्टूबर 1764: हेक्टर मुनरो ने मीर कासिम, शुजाउद्दौला और शाह आलम द्वितीय को हराया; इलाहाबाद की संधि (1765) से कंपनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी मिली।

> **त्वरित दोहराव:** बख्तियार खिलजी लगभग 1200, ओदंतपुरी, तबकात-ए-नासिरी; बिहार नाम विहार से; मिथिला में कर्नाट वंश (नान्यदेव 1097) और ओइनवार; शरफुद्दीन मनेरी (फिरदौसी) का निधन 1381; शेरशाह: रोहतासगढ़, चौसा 1539, कन्नौज 1540, कालिंजर 1545, सासाराम मकबरा, रुपया, पट्टा-कबूलियत, पटना किला 1541; बिहार सूबा 1580; अज़ीमाबाद 1704; गुरु गोबिंद सिंह का जन्म पटना में 1666; मीर कासिम मुंगेर में; बक्सर 22 अक्टूबर 1764; दीवानी 1765।

आधुनिक बिहार और स्वतंत्रता संग्राम: 1857 से जेपी आंदोलन तक

बिहार में 1857 का विद्रोह: जुलाई 1857 में पटना में असंतोष भड़का, जब पुस्तक-विक्रेता पीर अली ने विद्रोह किया; कमिश्नर विलियम टेलर ने 7 जुलाई को पीर अली को फाँसी दिलवा दी। 25 जुलाई को दानापुर छावनी में तीन रेजिमेंटों के सिपाहियों ने विद्रोह किया और आरा की ओर कूच किया, जहाँ जगदीशपुर के जमींदार बाबू कुँवर सिंह ने, जो उस समय लगभग 80 वर्ष के थे, नेतृत्व सँभाला। उन्होंने आरा के एक छोटे किलेबंद मकान को घेर लिया, जिसकी रक्षा मुट्ठी भर अंग्रेज़ और सिख सैनिक कर रहे थे। इसके बाद कुँवर सिंह मध्य भारत, अवध और पूर्वी उत्तर प्रदेश में लड़ते रहे और 1858 में आज़मगढ़ पर अधिकार किया। घर लौटते समय गंगा पार करते हुए उनकी बाँह में गोली लगी, और कहा जाता है कि उन्होंने वह बाँह काटकर गंगा को अर्पित कर दी। 23 अप्रैल 1858 को उन्होंने जगदीशपुर के निकट एक अंग्रेज़ सेना को हराया और 26 अप्रैल 1858 को उनका निधन हो गया; उनके भाई अमर सिंह ने संघर्ष जारी रखा।

वहाबी आंदोलन: रायबरेली के सैयद अहमद से प्रेरित वहाबी आंदोलन का उद्देश्य धार्मिक सुधार और सशस्त्र संघर्ष था। भारत में इसका मुख्य केंद्र पटना था, जहाँ सादिकपुर परिवार के विलायत अली और इनायत अली इसका संचालन करते थे; वे उत्तर-पश्चिमी सीमांत पर पहले सिखों और बाद में अंग्रेज़ों के विरुद्ध लड़ने के लिए जन और धन भेजते थे। सरकार ने षड्यंत्र के मुकदमों की एक शृंखला से, विशेषकर 1864 के अंबाला मुकदमे और 1865 के पटना मुकदमे से, इसे कुचल दिया, और इसके नेताओं को अंडमान भेज दिया गया।

अलग प्रांत: एक शताब्दी से अधिक समय तक बिहार का शासन बंगाल प्रेसीडेंसी के अंग के रूप में होता रहा। 1890 के दशक से सच्चिदानंद सिन्हा और महेश नारायण जैसे शिक्षित बिहारियों ने बिहार टाइम्स जैसे पत्रों के माध्यम से अलग प्रांत की माँग उठाई। दिसंबर 1911 के दिल्ली दरबार में बंगाल विभाजन रद्द होने के बाद 22 मार्च 1912 को बिहार और उड़ीसा प्रांत बना, जिसकी राजधानी पटना थी और पहले लेफ्टिनेंट-गवर्नर सर चार्ल्स स्टुअर्ट बेली थे। इसके बाद 1916 में पटना उच्च न्यायालय और 1917 में पटना विश्वविद्यालय स्थापित हुए। 1920 में लॉर्ड सत्येंद्र प्रसन्न सिन्हा प्रांत के गवर्नर बने, जो किसी प्रांत के प्रमुख बनने वाले पहले भारतीय थे। 1 अप्रैल 1936 को उड़ीसा अलग प्रांत बन गया। बिहार क्रांतिकारियों की भूमि भी रहा: 30 अप्रैल 1908 को खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी ने मुज़फ़्फ़रपुर में जज किंग्सफोर्ड को निशाना बनाकर बम फेंका, और खुदीराम को मुज़फ़्फ़रपुर में फाँसी दी गई।

चंपारण और गांधीवादी आंदोलन: राजकुमार शुक्ल दिसंबर 1916 के लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन में गांधीजी से मिले और उन्हें तिनकठिया प्रथा में बँधे नील किसानों की दुर्दशा देखने के लिए राज़ी किया; इस प्रथा में किसानों को हर 20 कट्ठे में से 3 कट्ठे पर नील उगाना पड़ता था। अप्रैल 1917 में गांधीजी मोतिहारी पहुँचे, जिला छोड़ने के आदेश की अवहेलना की, और उनके विरुद्ध मुकदमा वापस ले लिया गया। राजेंद्र प्रसाद, ब्रजकिशोर प्रसाद, अनुग्रह नारायण सिन्हा, मज़हरुल हक, जे.बी. कृपलानी और महादेव देसाई के साथ उन्होंने हज़ारों किसानों के बयान दर्ज किए, और चंपारण कृषि अधिनियम 1918 ने यह प्रथा समाप्त कर दी। असहयोग आंदोलन के दौरान गांधीजी ने 6 फरवरी 1921 को पटना में बिहार विद्यापीठ का उद्घाटन किया, और मज़हरुल हक ने सदाकत आश्रम की स्थापना की, जो बाद में बिहार कांग्रेस का मुख्यालय बना। किसान आंदोलन में स्वामी सहजानंद सरस्वती ने 1929 में बिहार प्रांतीय किसान सभा की स्थापना की और 1936 में अखिल भारतीय किसान सभा के पहले अध्यक्ष बने।

भारत छोड़ो आंदोलन और पटना सचिवालय के शहीद: 9 अगस्त 1942 को राष्ट्रीय नेताओं की गिरफ़्तारी के बाद बिहार में देश के सबसे उग्र विद्रोहों में से एक हुआ; रेल और तार की लाइनें काट दी गईं और थानों पर हमले हुए। 11 अगस्त 1942 को पटना सचिवालय पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने के लिए बढ़ रहे विद्यार्थियों पर गोली चलाई गई, जिसमें उनमें से सात मारे गए; सचिवालय के सामने स्थित शहीद स्मारक उनकी स्मृति में है। जयप्रकाश नारायण नवंबर 1942 में दीपावली की रात रामनंदन मिश्र और योगेंद्र शुक्ल जैसे साथियों के साथ हज़ारीबाग केंद्रीय कारागार से निकल भागे और नेपाल की तराई में प्रशिक्षित आज़ाद दस्तों सहित भूमिगत प्रतिरोध संगठित किया।

राजेंद्र प्रसाद और अन्य नेता: 3 दिसंबर 1884 को जीरादेई (सिवान) में जन्मे डॉ. राजेंद्र प्रसाद चंपारण में गांधीजी से जुड़े, एक से अधिक बार कांग्रेस के अध्यक्ष रहे, 11 दिसंबर 1946 को संविधान सभा के अध्यक्ष चुने गए, और 1950 से 1962 तक भारत के पहले राष्ट्रपति रहे; उन्हें 1962 में भारत रत्न मिला। सच्चिदानंद सिन्हा ने 9 दिसंबर 1946 को संविधान सभा की पहली बैठक की अध्यक्षता अंतरिम अध्यक्ष के रूप में की। श्रीकृष्ण सिन्हा (बिहार केसरी) और अनुग्रह नारायण सिन्हा (बिहार विभूति) ने 1937 में बने कांग्रेस मंत्रिमंडल का नेतृत्व किया, और भोजपुर के जगजीवन राम दलित वर्गों के राष्ट्रीय नेता बने।

जयप्रकाश नारायण और जेपी आंदोलन: 11 अक्टूबर 1902 को सिताबदियारा में जन्मे जेपी ने 1934 में कांग्रेस समाजवादी पार्टी की स्थापना में भूमिका निभाई और बाद में विनोबा भावे के भूदान आंदोलन से जुड़े। 1974 में भ्रष्टाचार, बेरोज़गारी और महँगाई के विरुद्ध बिहार छात्र संघर्ष समिति के नेतृत्व में चल रहे छात्र आंदोलन ने उनसे नेतृत्व करने का आग्रह किया। 5 जून 1974 को पटना के गांधी मैदान की विशाल सभा में उन्होंने संपूर्ण क्रांति का आह्वान किया। आंदोलन पूरे देश में फैल गया, 25 जून 1975 को आपातकाल घोषित हुआ, और 1977 के चुनाव में जनता पार्टी विजयी हुई। लोकनायक के रूप में सम्मानित जेपी का 1979 में निधन हुआ और 1999 में उन्हें मरणोपरांत भारत रत्न दिया गया।

उदाहरण

- पटना के पुस्तक-विक्रेता पीर अली ने जुलाई 1857 में पटना में विद्रोह का नेतृत्व किया और कमिश्नर विलियम टेलर के आदेश पर 7 जुलाई 1857 को उन्हें फाँसी दी गई।
- दानापुर विद्रोह: 25 जुलाई 1857; जगदीशपुर के कुँवर सिंह (लगभग 80 वर्ष) ने विद्रोहियों का नेतृत्व किया, 23 अप्रैल 1858 को जगदीशपुर के निकट अंतिम लड़ाई जीती और 26 अप्रैल 1858 को उनका निधन हुआ।
- वहाबी आंदोलन: रायबरेली के सैयद अहमद से प्रेरित; पटना (सादिकपुर परिवार, विलायत अली और इनायत अली) इसका भारतीय केंद्र; अंबाला मुकदमा 1864, पटना मुकदमा 1865।
- बिहार और उड़ीसा प्रांत: 22 मार्च 1912, पहले लेफ्टिनेंट-गवर्नर चार्ल्स स्टुअर्ट बेली; लॉर्ड एस.पी. सिन्हा 1920 में इसके गवर्नर बने; उड़ीसा 1 अप्रैल 1936 को अलग हुआ।
- मुज़फ़्फ़रपुर बम कांड, 30 अप्रैल 1908: खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी के निशाने पर किंग्सफोर्ड था; खुदीराम को मुज़फ़्फ़रपुर में फाँसी दी गई।
- चंपारण सत्याग्रह 1917: राजकुमार शुक्ल के निमंत्रण पर; तिनकठिया यानी हर 20 कट्ठे में से 3 कट्ठे पर नील; चंपारण कृषि अधिनियम 1918 से समाप्त।
- बिहार विद्यापीठ का उद्घाटन गांधीजी ने 6 फरवरी 1921 को किया; मज़हरुल हक द्वारा स्थापित सदाकत आश्रम बिहार कांग्रेस का मुख्यालय बना।
- स्वामी सहजानंद सरस्वती ने बिहार प्रांतीय किसान सभा (1929) की स्थापना की और वे अखिल भारतीय किसान सभा (1936) के पहले अध्यक्ष बने।
- 11 अगस्त 1942: पटना सचिवालय पर तिरंगा फहराने का प्रयास करते सात विद्यार्थी गोली से शहीद हुए; शहीद स्मारक उनकी स्मृति में है।
- जेपी: जन्म सिताबदियारा में 11 अक्टूबर 1902; 5 जून 1974 को गांधी मैदान से संपूर्ण क्रांति का आह्वान; 1999 में भारत रत्न (मरणोपरांत)।

> **त्वरित दोहराव:** पीर अली को फाँसी 7 जुलाई 1857; दानापुर विद्रोह 25 जुलाई 1857; जगदीशपुर के कुँवर सिंह का निधन 26 अप्रैल 1858; सादिकपुर के वहाबी, पटना मुकदमा 1865; बिहार और उड़ीसा 22 मार्च 1912; मुज़फ़्फ़रपुर में खुदीराम 1908; चंपारण 1917, राजकुमार शुक्ल, अधिनियम 1918; बिहार विद्यापीठ 6 फरवरी 1921; सहजानंद, किसान सभा 1929/1936; सचिवालय के शहीद 11 अगस्त 1942; राजेंद्र प्रसाद (जीरादेई) राष्ट्रपति 1950-62; जेपी, संपूर्ण क्रांति 5 जून 1974।

बिहार का गठन, विधानमंडल और प्रशासन

राज्य का स्वरूप कैसे बना: बिहार की वर्तमान सीमाएँ तीन विभाजनों और एक हस्तांतरण का परिणाम हैं। 22 मार्च 1912 को बंगाल प्रेसीडेंसी से अलग करके बिहार और उड़ीसा प्रांत बनाया गया, इसीलिए 22 मार्च को बिहार दिवस मनाया जाता है। 1 अप्रैल 1936 को उड़ीसा अलग प्रांत बना। स्वतंत्रता के बाद संविधान के अंतर्गत बिहार भाग क का राज्य बना, और 1956 के पुनर्गठन में बिहार और पश्चिम बंगाल (राज्यक्षेत्र अंतरण) अधिनियम 1956 के तहत मानभूम जिले का पुरुलिया क्षेत्र और पूर्णिया जिले का एक भाग पश्चिम बंगाल को दे दिया गया। अंततः बिहार पुनर्गठन अधिनियम 2000 द्वारा 15 नवंबर 2000 को, बिरसा मुंडा की जयंती पर, छोटानागपुर और संथाल परगना क्षेत्रों से झारखंड राज्य बनाया गया।

झारखंड के अलग होने से क्या बदला: झारखंड अपने साथ बिहार के अधिकांश खनिज, वन, भारी उद्योग और पठारी भूमि ले गया, जिससे बिहार लगभग पूरी तरह मैदानी, कृषि-प्रधान और घनी आबादी वाला राज्य रह गया। विधानसभा की सीटें 324 से घटकर 243, बिहार की लोकसभा सीटें 54 से 40 और राज्यसभा सीटें 22 से 16 रह गईं। परीक्षाओं में ये पहले और बाद की संख्याएँ अक्सर पूछी जाती हैं, साथ ही यह तथ्य भी कि कभी प्रांत की ग्रीष्मकालीन राजधानी रहा राँची झारखंड में चला गया।

द्विसदनीय विधानमंडल: बिहार उन गिने-चुने राज्यों में है जिनके विधानमंडल में दो सदन हैं, और अनुच्छेद 168 ऐसे राज्यों में इसका नाम गिनाता है। विधानसभा में 243 निर्वाचित सदस्य हैं, जिनमें परिसीमन आदेश 2008 के अनुसार 38 सीटें अनुसूचित जातियों और 2 सीटें अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षित हैं; इसका सामान्य कार्यकाल 5 वर्ष है। विधान परिषद में 75 सदस्य हैं। अनुच्छेद 171 के अनुसार विधान परिषद के सदस्यों की संख्या विधानसभा की सदस्य संख्या के एक-तिहाई से अधिक और 40 से कम नहीं हो सकती; इसके लगभग एक-तिहाई सदस्य विधायकों द्वारा, लगभग एक-तिहाई स्थानीय निकायों द्वारा, एक-बारहवाँ भाग स्नातकों द्वारा और एक-बारहवाँ भाग शिक्षकों द्वारा चुने जाते हैं, तथा शेष को राज्यपाल साहित्य, विज्ञान, कला, सहकारी आंदोलन और समाज सेवा का विशेष ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों में से नामित करते हैं। विधान परिषद एक स्थायी सदन है: इसके एक-तिहाई सदस्य हर दूसरे वर्ष सेवानिवृत्त होते हैं। भारत शासन अधिनियम 1935 के अंतर्गत भी बिहार में द्विसदनीय विधानमंडल था।

संसद में प्रतिनिधित्व: बिहार लोकसभा में 40 सदस्य भेजता है, जिनमें 6 सीटें अनुसूचित जातियों के लिए आरक्षित हैं और अनुसूचित जनजातियों के लिए कोई नहीं; केवल उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल की सीटें इससे अधिक हैं। राज्यसभा में बिहार के 16 सदस्य हैं, जिन्हें विधानसभा के सदस्य एकल संक्रमणीय मत द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति से चुनते हैं।

कार्यपालिका और उच्च न्यायालय: हर राज्य की तरह बिहार में भी कार्यपालिका शक्ति औपचारिक रूप से राज्यपाल (अनुच्छेद 154) में और व्यवहार में मुख्यमंत्री के नेतृत्व वाली मंत्रिपरिषद (अनुच्छेद 163 और 164) में निहित है। 91वें संशोधन (2003) के बाद से मंत्रिपरिषद का आकार विधानसभा की सदस्य संख्या के 15 प्रतिशत से अधिक नहीं हो सकता, अर्थात बिहार में मुख्यमंत्री सहित अधिकतम 36 मंत्री हो सकते हैं। पटना उच्च न्यायालय की स्थापना 1916 में हुई; यह उड़ीसा का भी काम देखता था, जब तक कि 1948 में उड़ीसा को अपना उच्च न्यायालय नहीं मिल गया। बिहार केसरी श्रीकृष्ण सिन्हा 1946 से 1961 में अपने निधन तक सरकार के प्रमुख रहे और पहले मुख्यमंत्री के रूप में याद किए जाते हैं, जबकि जयरामदास दौलतराम स्वतंत्रता के बाद के पहले राज्यपाल थे।

स्थानीय शासन: बिहार के जिले प्रमंडलों में समूहित हैं और अनुमंडलों तथा प्रखंडों में बँटे हैं, जिनका संचालन जिलाधिकारी (समाहर्ता), अनुमंडल पदाधिकारी और प्रखंड विकास पदाधिकारी करते हैं। ग्रामीण स्वशासन 73वें संशोधन (1992) के त्रिस्तरीय ढाँचे पर आधारित है: ग्राम पंचायत, पंचायत समिति और जिला

परिषद। बिहार पंचायत राज अधिनियम 2006 के साथ बिहार पंचायतों की 50 प्रतिशत सीटें और पद महिलाओं के लिए आरक्षित करने वाला पहला राज्य बना; इसी अधिनियम ने ग्राम कचहरी भी बनाई, जो सरपंच की अध्यक्षता वाला निर्वाचित ग्राम न्यायालय है और छोटे दीवानी व फौजदारी विवाद निपटाता है। नगरों का शासन बिहार नगरपालिका अधिनियम 2007 के अंतर्गत नगर निगमों, नगर परिषदों और नगर पंचायतों द्वारा होता है।

राजकीय प्रतीक और भाषा: राज्य के प्रतीक-चिह्न में बोधि वृक्ष है, जो बोधगया की याद दिलाता है। राजकीय पक्षी गौरैया और राजकीय वृक्ष पीपल है। हिंदी राज्य की राजभाषा है और उर्दू द्वितीय राजभाषा।

उदाहरण

- बिहार दिवस: 22 मार्च, जो 1912 में बिहार और उड़ीसा प्रांत के गठन की याद में मनाया जाता है।
- झारखंड का गठन 15 नवंबर 2000 को, बिरसा मुंडा की जयंती पर, बिहार पुनर्गठन अधिनियम 2000 द्वारा हुआ।
- 2000 से पहले और बाद: विधानसभा 324 से 243 सीटें, लोकसभा 54 से 40, राज्यसभा 22 से 16।
- बिहार विधानसभा: 243 सीटें, जिनमें 38 अनुसूचित जातियों और 2 अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षित (परिसीमन आदेश 2008); विधान परिषद: 75 सदस्य।
- अनुच्छेद 171: विधान परिषद में अधिकतम विधानसभा के एक-तिहाई और न्यूनतम 40 सदस्य हो सकते हैं; इसके एक-तिहाई सदस्य हर दूसरे वर्ष सेवानिवृत्त होते हैं।
- लोकसभा: बिहार से 40 सीटें (6 अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के लिए कोई नहीं), उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल के बाद चौथा स्थान; राज्यसभा: 16 सीटें।
- पटना उच्च न्यायालय: 1916; 1948 में उड़ीसा उच्च न्यायालय बनने तक यह उड़ीसा का भी काम देखता था।
- 91वाँ संशोधन (2003): मंत्रियों की संख्या विधानसभा के 15 प्रतिशत तक सीमित, अतः बिहार में अधिकतम 36।
- बिहार पंचायत राज अधिनियम 2006: पंचायतों में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण (ऐसा करने वाला पहला राज्य) और ग्राम कचहरी।
- 1956: बिहार और पश्चिम बंगाल (राज्यक्षेत्र अंतरण) अधिनियम के तहत पुरुलिया और पूर्णिया का एक भाग बिहार से पश्चिम बंगाल में गया।

> **त्वरित दोहराव:** बिहार दिवस 22 मार्च (1912); उड़ीसा अलग 1 अप्रैल 1936; पुरुलिया पश्चिम बंगाल को 1956; झारखंड 15 नवंबर 2000; विधानसभा 324 से 243 (38 अनुसूचित जाति, 2 अनुसूचित जनजाति), लोकसभा 54 से 40 (6 अनुसूचित जाति), राज्यसभा 22 से 16; विधान परिषद 75 (अनुच्छेद 171 की सीमाएँ); पटना उच्च न्यायालय 1916; अधिकतम 36 मंत्री (15 प्रतिशत, 91वाँ संशोधन); पहले मुख्यमंत्री श्रीकृष्ण सिन्हा; पंचायत राज अधिनियम 2006, महिलाओं को 50 प्रतिशत, ग्राम कचहरी; राजकीय पक्षी गौरैया, वृक्ष पीपल।

बिहार का भूगोल: स्थिति, सीमाएँ और भौतिक विभाग

स्थिति और विस्तार: बिहार पूर्वी भारत में मध्य गंगा के मैदान में 24°20'10" उत्तरी अक्षांश से 27°31'15" उत्तरी अक्षांश तथा 83°19'50" पूर्वी देशांतर से 88°17'40" पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। इसका क्षेत्रफल 94,163 वर्ग किमी है, जो भारत के क्षेत्रफल का लगभग 2.86 प्रतिशत है। यह स्थलरुद्ध है, आकार में मोटे तौर पर आयताकार है और उत्तर-दक्षिण की तुलना में पश्चिम-पूर्व दिशा में अधिक फैला है। कर्क रेखा बिहार से होकर नहीं गुजरती; यह इसके दक्षिण में झारखंड से होकर जाती है।

पड़ोसी: बिहार की उत्तर में नेपाल से अंतरराष्ट्रीय सीमा लगती है, तथा पूर्व में पश्चिम बंगाल, दक्षिण में झारखंड और पश्चिम में उत्तर प्रदेश से राज्य सीमाएँ लगती हैं। नेपाल सीमा पश्चिम में पश्चिमी चंपारण से पूर्व में किशनगंज तक फैली है और खुली है: 1950 की भारत-नेपाल शांति और मैत्री संधि के अंतर्गत लोग बिना पासपोर्ट के आर-पार जाते हैं। प्रमुख सीमा-पार स्थल बीरगंज के सामने रक्सौल और विराटनगर के सामने जोगबनी हैं। बांग्लादेश बिहार को नहीं छूता, यद्यपि किशनगंज पश्चिम बंगाल के संकरे सिलीगुड़ी गलियारे के निकट है।

तीन भौतिक विभाग: भूगोलवेत्ता बिहार को तीन व्यापक भागों में बाँटते हैं: सुदूर उत्तर-पश्चिम में शिवालिक या उप-हिमालयी पट्टी, मध्य में विशाल गंगा का मैदान, और दक्षिण में पठारी सीमांत क्षेत्र। पश्चिम से पूर्व बहती गंगा इस मैदान को उत्तर बिहार के मैदान और दक्षिण बिहार के मैदान में बाँटती है, जो मिट्टी, नदियों और बाढ़ के स्वरूप में एक-दूसरे से भिन्न हैं।

शिवालिक की तलहटी: पश्चिमी चंपारण के उत्तर में नेपाल सीमा के साथ फैली एक संकरी पहाड़ी पट्टी राज्य का एकमात्र हिमालयी भाग है। इसमें रामनगर दून और सोमेश्वर श्रेणी शामिल हैं; सोमेश्वर श्रेणी में बिहार का सबसे ऊँचा स्थान है। ये पहाड़ियाँ वाल्मीकि के वनों से ढकी हैं और यहाँ भारी वर्षा होती है। इनके दक्षिण में तराई है, ऊँची घास और दलदल की नम पट्टी, जहाँ अनेक धाराएँ कंकड़-पत्थरों के नीचे से फूटकर निकलती हैं।

उत्तर बिहार का मैदान: गंडक, बूढ़ी गंडक, बागमती, कमला, कोसी और महानंदा जैसी हिमालयी नदियों द्वारा निर्मित यह मैदान समतल, उपजाऊ और अत्यधिक बाढ़-प्रवण है। नदियों के निकट नई जलोढ़ मिट्टी (खादर) और उनसे दूर पुरानी जलोढ़ मिट्टी (बांगर) मिलती है। यहाँ जगह-जगह चौर हैं, यानी तश्तरी जैसे गड्ढे जिनमें वर्षा के बाद पानी भरा रहता है, और मौन हैं, यानी नदियों के छोड़े हुए मोड़ या गोखुर झीलें, जिनमें बेगूसराय की कावर झील सबसे प्रसिद्ध है। कोसी ने एक विशाल जलोढ़ पंख बनाया है और पिछली दो शताब्दियों में यह पश्चिम की ओर खिसकी है। दियारा बड़ी नदियों के किनारे के द्वीप और रेतीले तट हैं।

दक्षिण बिहार का मैदान और पठारी सीमांत: उत्तरी मैदान से संकरा दक्षिण बिहार का मैदान उत्तर में गंगा की ओर ढलान वाला है और इसे सोन, पुनपुन, फल्गु और किउल नदियाँ पार करती हैं। गंगा के किनारे मोकामा और बाढ़ के बीच टाल क्षेत्र है, एक निचला बेसिन जो मानसून में डूब जाता है और जाड़े में मसूर व चना उगाता है। दक्षिणी सीमा पर विंध्य श्रेणियों और छोटानागपुर पठार की बाहरी पहाड़ियाँ उठती हैं: दक्षिण-पश्चिम में कैमूर पठार, जो विंध्य का विस्तार है

और जिस पर रोहतासगढ़ का किला है; राजगीर की पहाड़ियाँ; बराबर की पहाड़ियाँ; मुंगेर की खड़गपुर पहाड़ियाँ; तथा जमुई, नवादा और बाँका की पहाड़ियाँ। राजगीर (ब्रह्मकुंड) और मुंगेर के सीताकुंड व भीमबांध के गर्म जल-स्रोत चट्टानों में गहरे भ्रंशों का संकेत देते हैं।

भूकंप और जनसंख्या: उत्तर बिहार उस क्षेत्र के निकट है जहाँ भारतीय प्लेट हिमालय के नीचे धँसती है, और नेपाल सीमा से लगे क्षेत्र भारत के सबसे अधिक भूकंप-प्रवण क्षेत्रों में हैं। 15 जनवरी 1934 के बिहार-नेपाल भूकंप ने मुंगेर, दरभंगा और मोतिहारी को तबाह कर दिया, और 21 अगस्त 1988 को एक और भूकंप ने उत्तर बिहार को झकझोरा। जनगणना 2011 में बिहार की जनसंख्या 10,40,99,452 दर्ज हुई, जो उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र के बाद तीसरी सबसे बड़ी है; जनसंख्या घनत्व 1,106 प्रति वर्ग किमी (राज्यों में सर्वाधिक), लिंगानुपात 918 और साक्षरता दर 61.8 प्रतिशत (राज्यों में सबसे कम) रही।

उदाहरण

- अक्षांश 24°20'10" उत्तर से 27°31'15" उत्तर; देशांतर 83°19'50" पूर्व से 88°17'40" पूर्व।
- क्षेत्रफल 94,163 वर्ग किमी, भारत का लगभग 2.86 प्रतिशत; स्थलरुद्ध, और उत्तर-दक्षिण की तुलना में पश्चिम-पूर्व दिशा में अधिक फैला।
- पड़ोसी: नेपाल (उत्तर), पश्चिम बंगाल (पूर्व), झारखंड (दक्षिण), उत्तर प्रदेश (पश्चिम); कर्क रेखा बिहार से नहीं गुजरती।
- नेपाल से लगे सीमा-पार स्थल: रक्सौल के सामने बीरगंज और जोगबनी के सामने विराटनगर; 1950 की भारत-नेपाल संधि के तहत सीमा खुली है।
- तीन भौतिक विभाग: शिवालिक की तलहटी (पश्चिमी चंपारण का उत्तरी भाग), गंगा का मैदान (नदी के उत्तर और दक्षिण) और दक्षिणी पठारी सीमांत (कैमूर, राजगीर, खड़गपुर पहाड़ियाँ)।
- सबसे ऊँचा स्थान: नेपाल सीमा पर पश्चिमी चंपारण की सोमेश्वर श्रेणी; रामनगर दून भी इसी शिवालिक पट्टी में है।
- चौर: तश्तरीनुमा गड्ढा; मौन: गोखुर झील; दियारा: नदी के द्वीप और रेतीले तट; टाल: मोकामा और बाढ़ के बीच का निचला बेसिन जो मानसून में डूबता है।
- कैमूर पठार: बिहार के दक्षिण-पश्चिम में विंध्य का विस्तार, जिस पर रोहतासगढ़ का किला है।
- गर्म जल-स्रोत: राजगीर का ब्रह्मकुंड; मुंगेर के सीताकुंड और भीमबांध।
- जनगणना 2011: जनसंख्या 10,40,99,452 (तीसरा स्थान), घनत्व 1,106 प्रति वर्ग किमी (राज्यों में सर्वाधिक), लिंगानुपात 918, साक्षरता 61.8 प्रतिशत (राज्यों में सबसे कम)।

> **त्वरित दोहराव:** 24°20'10" उ.-27°31'15" उ., 83°19'50" पू.-88°17'40" पू.; क्षेत्रफल 94,163 वर्ग किमी (2.86 प्रतिशत); उत्तर में नेपाल, पूर्व में पश्चिम बंगाल, दक्षिण में झारखंड, पश्चिम में उत्तर प्रदेश; कर्क रेखा नहीं गुजरती; रक्सौल-बीरगंज, जोगबनी-विराटनगर; शिवालिक पट्टी में सोमेश्वर (सर्वोच्च स्थान) और रामनगर दून; उत्तर बिहार मैदान: चौर, मौन, कोसी का पंख, दियारा; दक्षिणी मैदान: मोकामा-बाढ़ टाल; कैमूर पठार; गर्म जल-स्रोत राजगीर, सीताकुंड; भूकंप 15 जनवरी 1934; जनगणना 2011 घनत्व 1,106, साक्षरता 61.8।

बिहार की नदियाँ, बाढ़ और नदी परियोजनाएँ

गंगा, बिहार की रीढ़: बिहार का लगभग पूरा जल गंगा में जाता है। यह नदी बक्सर जिले के चौसा में राज्य में प्रवेश करती है, जहाँ उत्तर प्रदेश की सीमा पर कर्मनाशा इससे मिलती है; फिर बक्सर, पटना, मोकामा, मुंगेर और भागलपुर से होते हुए पूर्व की ओर बहती है और पश्चिम बंगाल की ओर जाते हुए झारखंड के साहिबगंज में निकल जाती है। इसकी उत्तरी सहायक नदियाँ हिमालय से आती हैं, हिम और मानसूनी वर्षा से पोषित होती हैं, भारी मात्रा में गाद लाती हैं और प्रायः मार्ग बदलती हैं; दक्षिणी सहायक नदियाँ विंध्य और छोटानागपुर के उच्च भागों से आती हैं, वर्षा पर निर्भर हैं और गर्मी में सिकुड़ जाती हैं। पटना से गुजरने वाला भाग राष्ट्रीय जलमार्ग 1 (हल्दिया से प्रयागराज, पूर्व नाम इलाहाबाद) का अंश है, जिसे 1986 में घोषित किया गया।

उत्तरी सहायक नदियाँ: पश्चिम से पूर्व की ओर, घाघरा (सरयू) चिरांद के निकट छपरा के पास गंगा से मिलती है। नेपाल में नारायणी या शालिग्रामी और प्राचीन ग्रंथों में सदानीरा कहलाने वाली गंडक वाल्मीकिनगर में बिहार में प्रवेश करती है और पटना के सामने सोनपुर-हाजीपुर में गंगा से मिलती है। बूढ़ी गंडक पश्चिमी चंपारण में सोमेश्वर पहाड़ियों के निकट से निकलती है, गंडक के पूर्व में मुज़फ़्फ़रपुर और समस्तीपुर से होकर बहती है और खगड़िया के निकट गंगा से मिलती है। बागमती काठमांडू घाटी से आकर सीतामढ़ी, मुज़फ़्फ़रपुर और दरभंगा से होकर बहती है; कमला-बलान मधुबनी और दरभंगा का जल बहाती है; कोसी सुपौल के भीमनगर के निकट प्रवेश करके कटिहार के कुरसेला के निकट गंगा से मिलती है; और महानंदा सुदूर उत्तर-पूर्व (किशनगंज, पूर्णिया, कटिहार) का जल लेकर बिहार की सीमा के बाहर गंगा से मिलती है।

कोसी, बिहार का शोक: कोसी या सप्तकोसी नेपाल में सात हिमालयी धाराओं से बनती है, जिनमें सुनकोसी, अरुण और तमुर प्रमुख हैं। सबसे अधिक गाद ढोने वाली नदियों में से एक होने के कारण यह लगभग दो शताब्दियों में 100 किमी से अधिक पश्चिम की ओर खिसक चुकी है, खेतों को बालू के नीचे दबाती और पुरानी धाराएँ पीछे छोड़ती गई है। भारत और नेपाल के बीच 1954 के कोसी समझौते के तहत भीमनगर के नेपाली भाग में हनुमाननगर के निकट बराज बनाया गया, साथ ही दोनों किनारों पर तटबंध और पूर्वी व पश्चिमी कोसी नहरें बनीं। 18 अगस्त 2008 को नेपाल के कुसहा में पूर्वी तटबंध टूट गया और नदी एक पुरानी धारा में मुड़ गई, जिससे सुपौल, मधेपुरा, अररिया, सहरसा और पूर्णिया में बाढ़ आ गई।

गंडक और सोन परियोजनाएँ: नेपाल के साथ 1959 के गंडक समझौते से वाल्मीकिनगर में बराज बना, जिसकी नहरें बिहार में चंपारण, सारण और तिरहुत, उत्तर प्रदेश के कुछ भागों और नेपाल के एक भाग की सिंचाई करती हैं। बिहार में दक्षिण से गंगा में मिलने वाली सहायक नदियों में सोन सबसे बड़ी है: यह मध्य प्रदेश में अमरकंटक के निकट से निकलती है और पटना के पश्चिम में मनेर के निकट गंगा से मिलती है। इसका जल भारत की सबसे पुरानी आधुनिक नहर प्रणालियों में से एक को पोषित करता है: डेहरी-ऑन-सोन का एनीकट (मेड़नुमा बाँध) 1870 के दशक में बना, और बाद में ऊपर की ओर बने इंद्रपुरी बराज ने उसका स्थान लिया। सोन नहरों ने पुराने शाहाबाद क्षेत्र, विशेषकर रोहतास और कैमूर, को बिहार का धान का कटोरा बना दिया।

दक्षिण की अन्य नदियाँ: पुनपुन छोटानागपुर पठार से निकलकर पटना के पूर्व में फतुहा में गंगा से मिलती है; इसके तट पर भी पिंडदान होता है। फल्गु बोधगया के निकट निरंजना (लीलाजन) और मोहना के मिलने से बनती है; गया और वहाँ का विष्णुपद मंदिर इसी के तट पर हैं, और वर्ष के अधिकांश समय

इसका जल रेतीली तली के नीचे बहता है, इसलिए इसे अंतःसलिला कहा जाता है। परंपरा में अपवित्र मानी जाने वाली कर्मनाशा उत्तर प्रदेश के साथ सीमा का एक भाग बनाती है। किउल जमुई और लखीसराय का जल बहाती है, और अजय जमुई के निकट से निकलकर पश्चिम बंगाल में जाती है।

बाढ़ और तटबंध: उत्तर बिहार भारत के सबसे अधिक बाढ़-प्रवण क्षेत्रों में है, क्योंकि यहाँ नेपाल में भारी मानसूनी वर्षा, हिमालय की तीव्र ढलान, भारी गाद और समतल मैदान एक साथ मिलते हैं। 1954 की बाढ़ के बाद सरकार ने मुख्यतः तटबंधों पर भरोसा किया, और तब से इनकी लंबाई कई गुना बढ़ी है, फिर भी बाढ़ से होने वाली क्षति कम नहीं हुई: तटबंध गाद को रोककर नदी की तली ऊँची कर देते हैं, अपने पीछे जलजमाव पैदा करते हैं, और टूटने पर भयंकर विनाश करते हैं। लंबे समय से चर्चित समाधान नेपाल के बराहक्षेत्र में कोसी पर ऊँचा बाँध है, जो जल-भंडारण और बिजली उत्पादन भी करेगा; इसलिए बिहार की बाढ़ आंशिक रूप से भारत-नेपाल का प्रश्न है।

पुल और आर्द्रभूमियाँ: बिहार में गंगा पर मोकामा का राजेंद्र सेतु (1959) है, जो नदी पर राज्य का पहला रेल-सह-सड़क पुल है; पटना और हाजीपुर के बीच महात्मा गांधी सेतु (1982) है, जिसकी लंबाई 5.5 किमी से अधिक है और जिसे लंबे समय तक भारत के सबसे लंबे नदी पुलों में गिना जाता रहा; तथा भागलपुर में विक्रमशिला सेतु है। मैदानों में अनेक आर्द्रभूमियाँ हैं: बेगूसराय की कावर झील (काबर ताल), जो बिहार का पहला रामसर स्थल (2020) है और जिसे प्रायः एशिया की सबसे बड़ी मीठे पानी की गोखुर झील कहा जाता है; दरभंगा की कुशेश्वर स्थान आर्द्रभूमि; और वैशाली की बरैला झील; तीनों पक्षी अभयारण्य भी हैं।

उदाहरण

- गंगा बक्सर जिले के चौसा में बिहार में प्रवेश करती है, जहाँ कर्मनाशा इससे मिलती है, और पटना, मुंगेर व भागलपुर से होकर पश्चिम से पूर्व बहती है।
- पश्चिम से पूर्व उत्तरी सहायक नदियाँ: घाघरा, गंडक, बूढ़ी गंडक, बागमती, कमला-बलान, कोसी, महानंदा।
- दक्षिणी नदियाँ: कर्मनाशा, सोन, पुनपुन, फल्गु, किउल और अजय; ये वर्षा पर निर्भर हैं और गर्मी में सिकुड़ जाती हैं।
- संगम: घाघरा छपरा के निकट, गंडक सोनपुर-हाजीपुर में, सोन मनेर के निकट, पुनपुन फतुहा में, बूढ़ी गंडक खगड़िया के निकट, कोसी कुरसेला के निकट।
- कोसी: नेपाल की सप्तकोसी (सुनकोसी, अरुण, तमुर); बिहार का शोक; कोसी समझौता 1954; हनुमाननगर के निकट बराज; 18 अगस्त 2008 को कुसहा में तटबंध टूटा।
- गंडक समझौता 1959; वाल्मीकिनगर बराज से बिहार, उत्तर प्रदेश और नेपाल में सिंचाई होती है।
- सोन: अमरकंटक के निकट उद्गम; डेहरी-ऑन-सोन का एनीकट (1870 का दशक), बाद में इंद्रपुरी बराज; सोन नहरों से रोहतास-कैमूर बिहार का धान का कटोरा बना।
- फल्गु: बोधगया के निकट निरंजना (लीलाजन) और मोहना के मिलने से बनती है; गया का विष्णुपद मंदिर इसके तट पर है; इसे अंतःसलिला कहते हैं।
- गंगा के पुल: राजेंद्र सेतु, मोकामा (1959); महात्मा गांधी सेतु, पटना-हाजीपुर (1982); विक्रमशिला सेतु, भागलपुर।
- कावर झील (काबर ताल), बेगूसराय: बिहार का पहला रामसर स्थल (2020), जिसे प्रायः एशिया की सबसे बड़ी मीठे पानी की गोखुर झील कहा जाता है।

> **त्वरित दोहराव:** गंगा का प्रवेश चौसा में (कर्मनाशा), राष्ट्रीय जलमार्ग 1 (1986); उत्तर से: घाघरा, गंडक (वाल्मीकिनगर से सोनपुर), बूढ़ी गंडक, बागमती, कमला, कोसी (कुरसेला), महानंदा; दक्षिण से: सोन (अमरकंटक, मनेर के निकट संगम), पुनपुन (फतुहा), फल्गु (निरंजना + मोहना), कर्मनाशा, किउल; कोसी = बिहार का शोक, समझौता 1954, कुसहा में तटबंध टूटा 2008; गंडक समझौता 1959; डेहरी एनीकट 1870 का दशक, इंद्रपुरी बराज; राजेंद्र सेतु 1959, गांधी सेतु 1982; कावर झील रामसर स्थल 2020।

बिहार की जलवायु, मिट्टियाँ, वन और वन्यजीव

जलवायु का प्रकार: बिहार की जलवायु आर्द्र उपोष्ण मानसूनी है, जिसमें गर्मियाँ गर्म, मानसून नम और जाड़े ठंडे व शुष्क होते हैं। पूरी तरह कर्क रेखा के उत्तर में और समुद्र से दूर स्थित होने के कारण इसमें महाद्वीपीय विशेषता है: दक्षिण-पश्चिम में गया के आसपास गर्मियों का तापमान प्रायः 40 °C से ऊपर चला जाता है, मई में लू नामक गर्म शुष्क हवाएँ चलती हैं, और उत्तर में जाड़े की रातें ठंडी व कोहरे भरी होती हैं, कभी-कभी शीतलहर भी चलती है।

ऋतुएँ और वर्षा: अप्रैल और मई में नॉर्वेस्टर (काल बैसाखी) कहलाने वाले मानसून-पूर्व तूफ़ान मुख्यतः पूर्वी भाग में कुछ राहत देते हैं। दक्षिण-पश्चिम मानसून की बंगाल की खाड़ी शाखा लगभग मध्य जून में पहुँचती है और सितंबर तक वर्ष की अधिकांश वर्षा दे देती है। सबसे अधिक वर्षा उत्तर-पूर्व में हिमालय की तलहटी के निकट किशनगंज के आसपास होती है और पश्चिम तथा दक्षिण-पश्चिम की ओर घटती जाती है। सितंबर के अंत में होने वाली हथिया (हस्त नक्षत्र) की वर्षा धान की फसल के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, जबकि पश्चिमी विक्षोभों से होने वाली जाड़े की हल्की वर्षा गेहूँ के लिए लाभकारी है। वर्षा इतनी असमान है कि एक ही वर्ष में कुछ जिलों को बाढ़ और कुछ को सूखे का सामना करना पड़ सकता है।

मिट्टियाँ: लगभग पूरा राज्य जलोढ़ मिट्टी से ढका है। सुदूर उत्तर-पश्चिम में पहाड़ियों की तलहटी में गिरिपद दलदली मिट्टी और उसके बाद नेपाल सीमा के साथ तराई मिट्टी मिलती है। उत्तर बिहार के मैदान के उत्तर-पश्चिमी और मध्य भागों में, यानी गंडक और बूढ़ी गंडक के अपवाह क्षेत्र में, नई जलोढ़ मिट्टी चूनेदार (चूने से भरपूर) है और मक्का, गन्ना व तंबाकू के लिए उपयुक्त है। गंगा के दक्षिण में जलोढ़ पुरानी है: निचले टाल क्षेत्रों में भारी चिकनी मिट्टी है, जो मानसून में जलमग्न रहती है, नमी रोके रखती है और रबी की दलहनों के लिए उपयुक्त है, तथा दक्षिण बिहार के मैदान के अन्य भागों में भारी, चिपचिपी चिकनी मिट्टी मिलती है जिसे स्थानीय रूप से करैल-केवाल कहते हैं। दक्षिणी पहाड़ियों और कैमूर पठार पर लाल और पीली मिट्टियाँ हैं, जो पतली और कम उपजाऊ हैं।

वन क्षेत्र: राज्यों में बिहार का वन आवरण सबसे कम में से है, इसके क्षेत्रफल के दसवें भाग से भी कम, जबकि राष्ट्रीय वन नीति 1988 का लक्ष्य एक-तिहाई है; पुराने वनों का अधिकांश भाग 2000 में झारखंड में चला गया। वन दो पट्टियों में बचे हैं। उत्तर-पश्चिम में पश्चिमी चंपारण के वाल्मीकि वन उष्णकटिबंधीय आर्द्र पर्णपाती हैं, जिनका मुख्य वृक्ष साल है। दक्षिण में कैमूर, रोहतास, गया, नवादा, जमुई, मुंगेर और बाँका की पहाड़ियों पर उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन हैं, जिनमें साल, खैर, केंदू, महुआ, पलाश और बाँस जैसे वृक्ष मिलते हैं।

वाल्मीकि राष्ट्रीय उद्यान और बाघ अभयारण्य: पश्चिमी चंपारण के सुदूर उत्तर-पश्चिम में गंडक और नेपाल सीमा के बीच स्थित वाल्मीकि एक राष्ट्रीय उद्यान भी है और बाघ अभयारण्य (टाइगर रिज़र्व) भी; यह 1989-90 में प्रोजेक्ट टाइगर के अंतर्गत आया। यह नेपाल के चितवन राष्ट्रीय उद्यान और उत्तर प्रदेश के सोहगीबरवा अभयारण्य से सटा है, इसलिए बाघ एक साझा भू-भाग में विचरते हैं। इसका नाम महर्षि वाल्मीकि की याद दिलाता है, जिनका आश्रम इसी क्षेत्र में माना जाता है। बाघों के अलावा यहाँ तेंदुआ, स्लॉथ भालू, गौर, सांभर, चीतल और पाढ़ा (हॉग डियर) मिलते हैं, और कभी-कभी चितवन से एक सींग वाले गैंडे भी आ जाते हैं।

विक्रमशिला गांगेय डॉल्फ़िन अभयारण्य: 1991 में घोषित यह अभयारण्य भागलपुर जिले में सुल्तानगंज और कहलगाँव के बीच गंगा के भाग की रक्षा करता है और गंगा की नदी डॉल्फ़िन (प्लैटनिस्टा गैंजेटिका), जिसे स्थानीय रूप से सोंस कहते हैं, के लिए विशेष रूप से बना भारत का पहला संरक्षित क्षेत्र माना जाता है। यह डॉल्फ़िन लगभग दृष्टिहीन होती है और प्रतिध्वनि (इकोलोकेशन) से रास्ता पहचानती है; इसे स्वच्छ, गहरा और बहता जल चाहिए, इसलिए इसकी उपस्थिति नदी के स्वास्थ्य का सूचक है। 2009 में इसे भारत का राष्ट्रीय जलीय जीव घोषित किया गया।

अन्य अभयारण्य और पक्षी: कैमूर वन्यजीव अभयारण्य बिहार का सबसे बड़ा अभयारण्य है। मुंगेर का भीमबांध अपने गर्म जल-स्रोतों के लिए प्रसिद्ध है, गौतम बुद्ध अभयारण्य गया जिले में, राजगीर (पंत) अभयारण्य नालंदा जिले में और उदयपुर अभयारण्य पश्चिमी चंपारण में है। पक्षी आवासों में जमुई के नागी डैम और नकटी डैम पक्षी अभयारण्य, बेगूसराय का कावर झील पक्षी अभयारण्य, दरभंगा का कुशेश्वर स्थान पक्षी अभयारण्य और वैशाली की बरैला झील पर सालिम अली जुब्बा सहनी पक्षी अभयारण्य शामिल हैं। जाड़े में इन आर्द्रभूमियों में मध्य एशिया और साइबेरिया से प्रवासी बत्तखें और जलचर पक्षी आते हैं, और भागलपुर जिले में नवगछिया के निकट के बाढ़-मैदान गरुड़ (ग्रेटर एडजुटेंट स्टॉर्क) के प्रजनन स्थल हैं।

उदाहरण

- जलवायु: आर्द्र उपोष्ण मानसूनी; मई में लू; अप्रैल-मई में नॉर्वेस्टर (काल बैसाखी); दक्षिण-पश्चिम मानसून लगभग मध्य जून में पहुँचता है।
- सबसे अधिक वर्षा उत्तर-पूर्व (किशनगंज) में होती है और पश्चिम व दक्षिण-पश्चिम की ओर घटती है; मानसून के अंत की हथिया वर्षा धान के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।
- मिट्टियाँ: उत्तर-पश्चिम में गिरिपद दलदली और तराई मिट्टी, गंडक-बूढ़ी गंडक के मैदान में चूनेदार नई जलोढ़, दक्षिण में पुरानी जलोढ़ के साथ टाल की चिकनी मिट्टी और करैल-केवाल, दक्षिणी पहाड़ियों में लाल और पीली मिट्टी।
- वन आवरण: क्षेत्रफल के दसवें भाग से कम, जबकि राष्ट्रीय वन नीति 1988 का लक्ष्य एक-तिहाई है।
- वाल्मीकि (पश्चिमी चंपारण): राष्ट्रीय उद्यान और बाघ अभयारण्य दोनों, 1989-90 से प्रोजेक्ट टाइगर में, नेपाल के चितवन से सटा।
- विक्रमशिला गांगेय डॉल्फ़िन अभयारण्य (1991): भागलपुर जिले में सुल्तानगंज और कहलगाँव के बीच गंगा।
- गांगेय डॉल्फ़िन (सोंस, प्लैटनिस्टा गैंजेटिका): लगभग दृष्टिहीन, प्रतिध्वनि से रास्ता पहचानती है; 2009 में भारत का राष्ट्रीय जलीय जीव घोषित।
- कैमूर बिहार का सबसे बड़ा वन्यजीव अभयारण्य है; भीमबांध (मुंगेर) गर्म जल-स्रोतों के लिए प्रसिद्ध है; नागी डैम और नकटी डैम जमुई के पक्षी अभयारण्य हैं।
- आर्द्रभूमि पक्षी अभयारण्य: कावर झील (बेगूसराय), कुशेश्वर स्थान (दरभंगा), बरैला झील पर सालिम अली जुब्बा सहनी (वैशाली)।

> **त्वरित दोहराव:** आर्द्र उपोष्ण मानसूनी जलवायु; मई में लू; अप्रैल-मई में काल बैसाखी; मध्य जून से मानसून; सर्वाधिक वर्षा किशनगंज में; धान के लिए हथिया वर्षा; गंडक-बूढ़ी गंडक मैदान में चूनेदार जलोढ़, गंगा के दक्षिण में टाल की चिकनी मिट्टी और करैल-केवाल, दक्षिणी पहाड़ियों में लाल-पीली मिट्टी; वन दसवें भाग से कम (लक्ष्य एक-तिहाई, नीति 1988); वाल्मीकि राष्ट्रीय उद्यान और बाघ अभयारण्य (प्रोजेक्ट टाइगर 1989-90), चितवन से सटा; विक्रमशिला डॉल्फ़िन अभयारण्य 1991 (सुल्तानगंज-कहलगाँव); डॉल्फ़िन राष्ट्रीय जलीय जीव 2009; कैमूर सबसे बड़ा अभयारण्य।

बिहार की कृषि, उद्योग और भौगोलिक संकेतक (GI) उत्पाद

कृषि-प्रधान राज्य: 2000 के बाद बिहार के पास उपजाऊ मैदान तो रहे, पर उसके अधिकांश खनिज और भारी उद्योग झारखंड में चले गए, इसलिए कृषि और पशुपालन व मत्स्यपालन जैसे संबद्ध कार्य यहाँ के अधिकांश कामगारों को रोज़गार देते हैं। अधिकांश जोतें छोटी या सीमांत हैं, और उत्तर की बाढ़ तथा दक्षिण का सूखा अनेक फसलों का भाग्य तय करते हैं। कृषि वर्ष के चार मौसम हैं: भदई (शरद की फसलें, जैसे अगेती धान और मक्का, जो अगस्त-सितंबर में कटती हैं), अगहनी (मुख्य जाड़े का धान, जो अगहन मास में कटता है), रबी (गेहूँ, दलहन, तिलहन और जाड़े का मक्का) और गरमा (मूँग और सब्ज़ियों जैसी गर्मी की फसलें)। राज्य चार कृषि-जलवायु क्षेत्रों में बँटा है: I (उत्तर-पश्चिमी जलोढ़ मैदान), II (उत्तर-पूर्वी जलोढ़ मैदान), IIIA (दक्षिण-पूर्वी जलोढ़ मैदान) और IIIB (दक्षिण-पश्चिमी जलोढ़ मैदान)।

खाद्य फसलें: क्षेत्रफल की दृष्टि से धान मुख्य फसल है; सोन नहरों से सिंचित पुराना शाहाबाद क्षेत्र, विशेषकर रोहतास और कैमूर, बिहार का धान का कटोरा कहलाता है। गेहूँ मुख्य रबी फसल है। बिहार मक्का के लिए विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जो सभी मौसमों में और खासकर पूर्णिया, कटिहार और खगड़िया के आसपास कोसी-सीमांचल पट्टी में रबी फसल के रूप में उगाया जाता है। मोकामा और बाढ़ के बीच की टाल भूमि मसूर और चने के लिए जानी जाती है। गन्ना उत्तर-पश्चिम (पश्चिमी चंपारण, गोपालगंज, सिवान) में और जूट उत्तर-पूर्व (पूर्णिया, कटिहार, किशनगंज, अररिया) में केंद्रित है, तथा भागलपुर और बाँका के सुगंधित कतरनी चावल को अपना GI टैग प्राप्त है।

लीची, मखाना और पान: बिहार लीची और मखाने के लिए सबसे अधिक जाना जाता है, और भारत का अधिकांश मखाना यहीं उगाया जाता है। मुज़फ़्फ़रपुर की शाही लीची को GI टैग प्राप्त है, और मुज़फ़्फ़रपुर में लीची का एक राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्र कार्यरत है। मखाना (फॉक्स नट, जलीय पौधे यूरियल फेरॉक्स से) मिथिला और सीमांचल, विशेषकर दरभंगा, मधुबनी, पूर्णिया और कटिहार के तालाबों और आर्द्रभूमियों में उगाया जाता है, और दरभंगा में मखाने का एक ICAR अनुसंधान केंद्र कार्यरत है। मगध क्षेत्र (नवादा, गया, औरंगाबाद, नालंदा) का मगही पान और भागलपुर का जर्दालु आम भी GI टैग वाले हैं।

अनुसंधान और डेयरी: समस्तीपुर के पूसा में 1905 से कृषि अनुसंधान संस्थान था, जो आज के भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (IARI) का पूर्ववर्ती है; 1934 के भूकंप में हुई क्षति के बाद 1936 में इसे नई दिल्ली ले जाया गया; आज पूसा में डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय है, और बिहार कृषि विश्वविद्यालय भागलपुर के निकट सबौर में है। डेयरी क्षेत्र में राज्य का दुग्ध सहकारी संघ कॉम्फेड (COMFED) ग्राम सहकारी समितियों के आनंद पैटर्न पर सुधा ब्रांड से दूध और दुग्ध उत्पाद बेचता है।

उद्योग: बेगूसराय के बरौनी में सोवियत सहायता से बनी और 1964 में चालू हुई तेल रिफ़ाइनरी है, साथ ही एक ताप विद्युत केंद्र और एक उर्वरक कारखाना भी है, इसीलिए बेगूसराय को बिहार की औद्योगिक राजधानी कहा जाता है। मुंगेर के जमालपुर में 1862 में स्थापित रेल कारखाना है, जो भारत का सबसे पुराना पूर्ण विकसित रेल कारखाना है, और मुंगेर बंदूक-निर्माण तथा एक सिगरेट कारखाने के लिए भी जाना जाता है। रोहतास का डालमियानगर कभी विशाल रोहतास इंडस्ट्रीज़ समूह (सीमेंट, कागज़ और चीनी) का केंद्र था, जो अब बंद है। नई इकाइयों में मधेपुरा का इलेक्ट्रिक लोकोमोटिव कारखाना और सारण के मढ़ौरा का डीज़ल लोकोमोटिव कारखाना शामिल हैं, और NTPC कहलगाँव (भागलपुर) और बाढ़ (पटना) में बड़े ताप विद्युत संयंत्र चलाता है। चीनी मिलें उत्तर-पश्चिम की गन्ना पट्टी में केंद्रित हैं। बिहार के पास बचे खनिज सीमित हैं: रोहतास के अमझोर में पाइराइट, कैमूर और रोहतास में चूना-पत्थर, और नवादा-जमुई क्षेत्र में अभ्रक।

हस्तशिल्प और GI उत्पाद: मधुबनी या मिथिला चित्रकला सबसे प्रसिद्ध है। रेशम नगरी भागलपुर तसर रेशम बुनता है, जो भागलपुरी सिल्क के नाम से जाना जाता है। सिक्की शिल्प में उत्तर बिहार की आर्द्रभूमियों की सुनहरी सिक्की घास से टोकरियाँ, डिब्बे और आकृतियाँ बनाई जाती हैं, अधिकतर मधुबनी, दरभंगा और सीतामढ़ी की महिलाओं द्वारा। भागलपुर की मंजूषा कला, जिसे अंगिका कला भी कहते हैं, बिहुला और बिषहरी की कथा को मंदिर के आकार की पेटियों (मंजूषा) पर गुलाबी, हरे और पीले रंगों में चित्रित करती है। सुजनी कढ़ाई मुज़फ़्फ़रपुर से, एप्लिक (खटवा) कार्य पटना और वैशाली से, टिकुली कला पटना से और पत्थर की नक्काशी गया के पत्थरकट्टी से आती है। खाद्य पदार्थों में नालंदा जिले के सिलाव का खाजा GI टैग प्राप्त है।

उदाहरण

- बिहार के चार फसल मौसम: भदई (शरद), अगहनी (जाड़े का धान, अगहन में कटाई), रबी (जाड़ा) और गरमा (गर्मी)।
- कृषि-जलवायु क्षेत्र: I (उत्तर-पश्चिमी जलोढ़ मैदान), II (उत्तर-पूर्वी जलोढ़ मैदान), IIIA (दक्षिण-पूर्वी) और IIIB (दक्षिण-पश्चिमी)।
- बिहार का धान का कटोरा: सोन नहरों से सिंचित रोहतास और कैमूर (पुराना शाहाबाद); मोकामा-बाढ़ टाल मसूर और चने के लिए प्रसिद्ध है।
- GI टैग वाली उपज: शाही लीची (मुज़फ़्फ़रपुर), जर्दालु आम (भागलपुर), कतरनी चावल (भागलपुर-बाँका), मगही पान (मगध) और सिलाव खाजा (नालंदा)।
- मखाना (फॉक्स नट, यूरियल फेरॉक्स) मिथिला और सीमांचल के तालाबों में उगता है; मखाने (दरभंगा) और लीची (मुज़फ़्फ़रपुर) के अनुसंधान केंद्र।
- पूसा (समस्तीपुर): 1905 से कृषि अनुसंधान संस्थान (IARI का पूर्ववर्ती), जो 1934 के भूकंप के बाद 1936 में नई दिल्ली गया; अब डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय।
- बरौनी रिफ़ाइनरी (बेगूसराय): सोवियत सहायता से बनी, 1964 में चालू; बेगूसराय को बिहार की औद्योगिक राजधानी कहते हैं।
- जमालपुर (मुंगेर): 1862 का रेल कारखाना; मधेपुरा (इलेक्ट्रिक) और मढ़ौरा (डीज़ल) में लोकोमोटिव कारखाने; कहलगाँव और बाढ़ में NTPC संयंत्र।
- मंजूषा कला (भागलपुर) गुलाबी, हरे और पीले रंगों में बिहुला-बिषहरी की कथा कहती है; सिक्की शिल्प में सुनहरी घास; सुजनी कढ़ाई मुज़फ़्फ़रपुर की है।
- बिहार के पास बचे खनिज: अमझोर (रोहतास) में पाइराइट, कैमूर-रोहतास में चूना-पत्थर, नवादा-जमुई में अभ्रक।

> **त्वरित दोहराव:** मौसम भदई, अगहनी, रबी, गरमा; कृषि-जलवायु क्षेत्र I, II, IIIA, IIIB; धान का कटोरा रोहतास-कैमूर; कोसी-सीमांचल में मक्का; मोकामा टाल में दलहन; GI: शाही लीची, जर्दालु, कतरनी, मगही पान, सिलाव खाजा; मिथिला में मखाना; पूसा संस्थान 1905; बरौनी रिफ़ाइनरी 1964 (सोवियत सहायता); जमालपुर कारखाना 1862; मधेपुरा और मढ़ौरा लोकोमोटिव कारखाने; कहलगाँव और बाढ़ में NTPC; अमझोर में पाइराइट; भागलपुरी सिल्क, सिक्की, मंजूषा, सुजनी।

बिहार के पर्व, लोक कलाएँ, भाषाएँ और साहित्य

छठ पूजा: बिहार का सबसे महत्त्वपूर्ण पर्व सूर्य देव और छठी मैया को समर्पित है। यह कार्तिक शुक्ल षष्ठी को, दीपावली के छह दिन बाद, और फिर चैत्र में चैती छठ के रूप में मनाया जाता है। चार दिनों में क्रमशः नहाय-खाय (पवित्र स्नान और सादा भोजन), खरना (दिन भर का उपवास, जो शाम को गुड़ की खीर और रोटी से खोला जाता है), जल में खड़े होकर अस्ताचलगामी सूर्य को संध्या अर्घ्य, और अगली सुबह उगते सूर्य को उषा अर्घ्य होते हैं; मुख्य व्रत निर्जला होता है, यानी जल भी ग्रहण नहीं किया जाता। ठेकुआ प्रमुख प्रसाद है, जिसे बाँस की टोकरियों में ले जाया जाता है। औरंगाबाद जिले में देव का सूर्य मंदिर, जो असामान्य रूप से पश्चिममुखी है, छठ पर भारी भीड़ खींचता है।

महान मेले: सोनपुर मेला कार्तिक पूर्णिमा को सारण जिले के सोनपुर में गंडक और गंगा के संगम पर आरंभ होता है। हरिहरनाथ मंदिर और गज-ग्राह की कथा से जुड़ा यह मेला लंबे समय तक एशिया के सबसे बड़े पशु मेले के रूप में प्रसिद्ध रहा। श्रावणी मेला सावन मास में लगता है, जब काँवरिये भागलपुर जिले के सुल्तानगंज से गंगाजल लेकर पैदल देवघर के बाबा बैद्यनाथ तक जाते हैं, जो अब झारखंड में है। आश्विन के कृष्ण पक्ष में गया का पितृपक्ष मेला तीर्थयात्रियों को अहिल्याबाई होल्कर द्वारा पुनर्निर्मित विष्णुपद मंदिर, फल्गु तट और अक्षयवट पर अपने पूर्वजों का पिंडदान करने के लिए लाता है। अन्य क्षेत्रीय पर्वों में मिथिला का सामा-चकेवा, भाइयों के प्रति बहनों के प्रेम का कार्तिक का पर्व; जितिया, संतान के लिए माताओं का व्रत; मिथिला की नवविवाहिताओं का मधुश्रावणी; मैथिली नववर्ष जुड़-शीतल; और अंग क्षेत्र का बिहुला पर्व शामिल हैं।

लोक नृत्य और नाट्य: मिथिला और कोसी क्षेत्र की महिलाओं द्वारा किया जाने वाला जट-जटिन एक विवाहित दंपती, जट और जटिन, की कथा कहता है जो एक-दूसरे से दूर रहते हैं। झिझिया में मिथिला की महिलाएँ नवरात्र में सिर पर दीप रखे छिद्रयुक्त मिट्टी के घड़े लेकर नाचती हैं और टोने-टोटके से रक्षा की प्रार्थना करती हैं। डोमकच विवाह की रात वर के घर की महिलाएँ तब करती हैं जब पुरुष बारात लेकर चले जाते हैं। भिखारी ठाकुर, जिन्हें प्रायः भोजपुरी का

शेक्सपियर कहा जाता है, द्वारा प्रसिद्ध की गई भोजपुरी लोकनाट्य शैली बिदेसिया उस पत्नी की पीड़ा दिखाती है जिसका पति काम के लिए दूर शहर चला गया है। गीत परंपरा में संतान-जन्म पर सोहर, चैत्र मास में चैता, बरसात में कजरी, बेटी की विदाई पर समदाउन और शिव-गीत नचारी शामिल हैं, जिनमें से अनेक विद्यापति ने रचे।

मधुबनी चित्रकला: मिथिला चित्रकला पारंपरिक रूप से महिलाएँ कोहबर (वर-वधू के कक्ष) की दीवारों पर और फ़र्श पर अरिपन के रूप में बनाती थीं; इसमें प्राकृतिक रंगों और टहनियों या सरकंडों का उपयोग होता है तथा देवी-देवता, प्रकृति और विवाह के प्रतीक इसके विषय हैं। इसकी शैलियों में भरनी (रंग भरना), कचनी (महीन रेखाकारी), तांत्रिक, गोदना (गुदने के रूपांकन) और कोहबर शामिल हैं। ब्रिटिश अधिकारी डब्ल्यू.जी. आर्चर ने 1934 के भूकंप के बाद इन भितिचित्रों पर ध्यान दिया और उनका अभिलेखन किया, और 1966-68 के सूखे के दौरान अखिल भारतीय हस्तशिल्प बोर्ड ने महिलाओं को आय के लिए कागज़ पर चित्र बनाने को प्रोत्साहित किया। जितवारपुर और रांटी प्रसिद्ध चित्रकला गाँव हैं, और जगदंबा देवी 1975 में पद्मश्री पाने वाली पहली मधुबनी कलाकार थीं।

भाषाएँ: हिंदी बिहार की राजभाषा है और उर्दू द्वितीय राजभाषा। राज्य की प्रमुख क्षेत्रीय भाषाएँ भारतीय-आर्य भाषाओं के बिहारी समूह से संबंधित हैं। मिथिला में बोली जाने वाली और पारंपरिक रूप से तिरहुता (मिथिलाक्षर) लिपि में लिखी जाने वाली मैथिली को बोडो, डोगरी और संथाली के साथ 92वें संशोधन (2003) द्वारा आठवीं अनुसूची में जोड़ा गया। भोजपुरी पश्चिम (भोजपुर, बक्सर, रोहतास, सारण, सिवान, गोपालगंज, चंपारण) में बोली जाती है; मागधी प्राकृत से निकली मगही पटना, गया, नालंदा और नवादा के आसपास; अंगिका भागलपुर, मुंगेर और बाँका के आसपास; और बज्जिका वैशाली, मुज़फ़्फ़रपुर और सीतामढ़ी के आसपास। कैथी लिपि कभी बिहार में इन भाषाओं और न्यायालयी अभिलेखों के लिए व्यापक रूप से प्रयुक्त होती थी।

साहित्य: मैथिल कोकिल कहे जाने वाले विद्यापति (14वीं-15वीं शताब्दी) ओइनवार वंश के राजा शिवसिंह के दरबारी कवि थे; राधा-कृष्ण पर आधारित उनके पदावली गीतों ने मैथिली को प्रसिद्धि दिलाई, और उन्होंने अवहट्ट में कीर्तिलता भी लिखी। बेगूसराय के सिमरिया में जन्मे रामधारी सिंह दिनकर (1908-1974) को राष्ट्रकवि कहा गया; उन्होंने रश्मिरथी और कुरुक्षेत्र लिखीं, संस्कृति के चार अध्याय के लिए 1959 में साहित्य अकादमी पुरस्कार और उर्वशी के लिए 1972 में ज्ञानपीठ पुरस्कार पाया। पूर्णिया (अब अररिया) के फणीश्वरनाथ रेणु (1921-1977) ने मैला आँचल (1954) से आंचलिक उपन्यास की नींव रखी, और उनकी कहानी मारे गए गुलफाम पर फ़िल्म तीसरी कसम (1966) बनी। जनकवि नागार्जुन (वैद्यनाथ मिश्र, 1911-1998) ने मैथिली में यात्री नाम से लिखा और अपने मैथिली संग्रह पत्रहीन नग्न गाछ के लिए 1969 में साहित्य अकादमी पुरस्कार पाया।

उदाहरण

- छठ: कार्तिक शुक्ल षष्ठी, और फिर चैती छठ; चार दिन: नहाय-खाय, खरना, संध्या अर्घ्य और उषा अर्घ्य; ठेकुआ प्रसाद।
- देव (औरंगाबाद) का सूर्य मंदिर पश्चिममुखी है; छठ का व्रत निर्जला, यानी बिना जल का होता है।
- सोनपुर मेला: कार्तिक पूर्णिमा, गंडक-गंगा संगम, हरिहरनाथ मंदिर, गज-ग्राह की कथा; लंबे समय तक एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला।
- श्रावणी मेला: काँवरिये सुल्तानगंज (भागलपुर) से गंगाजल लेकर देवघर (झारखंड) के बाबा बैद्यनाथ तक जाते हैं।
- पितृपक्ष मेला: गया; विष्णुपद मंदिर (अहिल्याबाई होल्कर द्वारा पुनर्निर्मित), फल्गु तट और अक्षयवट पर पिंडदान।
- नृत्य: जट-जटिन (बिछुड़े दंपती की कथा, मिथिला-कोसी), झिझिया (सिर पर दीप-घड़े, नवरात्र), डोमकच (महिलाएँ, विवाह की रात); बिदेसिया भिखारी ठाकुर का भोजपुरी लोकनाट्य है।
- गीत: सोहर (संतान-जन्म), चैता (चैत्र), कजरी (बरसात), समदाउन (बेटी की विदाई), नचारी (शिव-गीत, जिनमें अनेक विद्यापति के हैं)।
- मैथिली: तिरहुता (मिथिलाक्षर) लिपि; 92वें संशोधन (2003) द्वारा बोडो, डोगरी और संथाली के साथ आठवीं अनुसूची में शामिल।
- भाषा मानचित्र: भोजपुरी (पश्चिम), मगही (पटना-गया), मैथिली (मिथिला), अंगिका (भागलपुर-मुंगेर), बज्जिका (वैशाली-मुज़फ़्फ़रपुर)।
- साहित्यकार: विद्यापति (मैथिल कोकिल, पदावली); दिनकर (उर्वशी, ज्ञानपीठ 1972); रेणु (मैला आँचल, 1954); नागार्जुन (मैथिली में यात्री)।

> **त्वरित दोहराव:** कार्तिक शुक्ल षष्ठी को छठ, 4 दिन, निर्जला व्रत, देव का पश्चिममुखी सूर्य मंदिर; कार्तिक पूर्णिमा को सोनपुर मेला (गंडक-गंगा); श्रावणी मेला सुल्तानगंज से देवघर; गया में पितृपक्ष (विष्णुपद); सामा-चकेवा, जितिया, मधुश्रावणी; जट-जटिन, झिझिया, डोमकच, बिदेसिया (भिखारी ठाकुर); मधुबनी शैलियाँ भरनी, कचनी, गोदना, जगदंबा देवी को पद्मश्री 1975; मैथिली आठवीं अनुसूची में 2003 (तिरहुता); दिनकर उर्वशी 1972; रेणु मैला आँचल 1954; नागार्जुन = यात्री।

बिहार के स्मारक, पर्यटन परिपथ और प्रसिद्ध व्यक्तित्व

बोधगया और महाबोधि मंदिर: गया जिले में बोधगया का महाबोधि मंदिर परिसर 2002 में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल बना। अशोक ने 3री शताब्दी ई.पू. में यहाँ पहला मंदिर बनवाया; लगभग 50 मीटर ऊँचा वर्तमान ईंटों का मंदिर 5वीं-6ठी शताब्दी ई. का है और भारत में बचे सबसे प्राचीन ईंट-मंदिरों में से एक है। परिसर में वज्रासन (हीरक सिंहासन), मूल बोधि वृक्ष का वंशज वृक्ष, अनिमेषलोचन चैत्य और कमल सरोवर हैं। 1880 के दशक में अलेक्जेंडर कनिंघम के निर्देशन में मंदिर का जीर्णोद्धार हुआ, और बोधगया मंदिर अधिनियम 1949 इसे हिंदू और बौद्ध सदस्यों वाली एक समिति के अधीन रखता है।

नालंदा, राजगीर और वैशाली: नालंदा महाविहार का पुरातात्त्विक स्थल 2016 में विश्व धरोहर स्थल बना, और नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम 2010 ने राजगीर में इसी नाम से एक विश्वविद्यालय को पुनर्जीवित किया। राजगीर में रत्नागिरि पहाड़ी पर विश्व शांति स्तूप (1969) है, जिसे जापान के निप्पोनज़ान म्योहोजी संघ ने बनवाया और जहाँ रज्जुमार्ग (रोपवे) से पहुँचा जाता है; साथ ही यहाँ गृध्रकूट, सप्तपर्णी गुफा, वेणुवन, प्राचीन साइक्लोपियन दीवार और ब्रह्मकुंड के गर्म जल-स्रोत भी हैं। वैशाली में कोल्हुआ का एकल सिंह-शीर्ष वाला अशोक स्तंभ, अभिषेक पुष्करिणी (लिच्छवियों का अभिषेक सरोवर) और अवशेष स्तूप हैं। पूर्वी चंपारण के केसरिया में एक विशाल उत्खनित बौद्ध स्तूप है, लौरिया नंदनगढ़ में सिंह-शीर्ष सहित सुरक्षित अशोक स्तंभ है, और भागलपुर के अंतीचक में विक्रमशिला के अवशेष हैं।

गुफाएँ और मौर्यकालीन पटना: जहानाबाद जिले की बराबर गुफाएँ, जिनमें लकड़ी की वास्तुकला की नकल पर तराशे प्रवेशद्वार वाली लोमस ऋषि गुफा और अशोक द्वारा आजीवकों को समर्पित सुदामा गुफा शामिल हैं, भारत की सबसे प्राचीन बची हुई शैलकृत गुफाएँ हैं; पास की नागार्जुनी गुफाएँ अशोक के पोते दशरथ ने दान कीं। इनकी चमकदार पॉलिश वाली भीतरी दीवारों ने ई.एम. फ़ॉर्स्टर के उपन्यास ए पैसेज टू इंडिया की माराबार गुफाओं को प्रेरित किया। पटना में कुम्हरार में 80 स्तंभों वाले मौर्यकालीन सभागार के अवशेष हैं, और अगम कुआँ एक प्राचीन कुआँ है जो किंवदंती में अशोक से जुड़ा है। दर्पण जैसी मौर्य पॉलिश वाली चँवरधारिणी दीदारगंज यक्षी 1917 में पटना में मिली।

मध्यकालीन और औपनिवेशिक स्मारक: सासाराम में शेरशाह सूरी का मकबरा एक कृत्रिम झील के बीच उठता है; यह 1540 के दशक का अष्टकोणीय लाल बलुआ पत्थर का भवन है। रोहतासगढ़ का किला कैमूर पठार पर है, पटना के निकट मनेर शरीफ़ की दरगाहों में जहाँगीर के शासनकाल में बनी छोटी दरगाह शामिल है, और तख्त श्री हरमंदिर साहिब पटना में गुरु गोबिंद सिंह के जन्मस्थान को चिह्नित करता है। पटना का गोलघर, बाहर की ओर घूमती सीढ़ियों वाला मधुमक्खी के छत्ते जैसा अन्नागार, 1770 के अकाल के बाद 1786 में कैप्टन जॉन गार्स्टिन ने बनवाया। पटना संग्रहालय, जिसे लोग जादूघर कहते हैं, 1917 में स्थापित हुआ। कैमूर जिले का अष्टकोणीय मुंडेश्वरी मंदिर भारत के सबसे प्राचीन सक्रिय (आज भी पूजित) मंदिरों में से एक माना जाता है।

पर्यटन परिपथ: बिहार के स्थलों को परिपथों में समूहित किया गया है। बौद्ध परिपथ बोधगया, राजगीर, नालंदा, वैशाली और केसरिया को राज्य के बाहर कुशीनगर और लुंबिनी से जोड़ता है। जैन परिपथ में पावापुरी, राजगीर और वैशाली के निकट कुंडग्राम आते हैं; सिख तीर्थयात्रा का केंद्र पटना साहिब है; सूफ़ी परिपथ का केंद्र मनेर और बिहारशरीफ हैं। रामायण परिपथ में सीता की जन्मभूमि मानी जाने वाली सीतामढ़ी और वाल्मीकिनगर आते हैं, जबकि चंपारण के गांधी परिपथ में 1917 में गांधीजी द्वारा स्थापित भितिहरवा आश्रम शामिल है।

प्रसिद्ध व्यक्तित्व: आर्यभट (जन्म 476 ई.) ने 499 ई. में कुसुमपुर (पटना) में आर्यभटीय की रचना की, स्थानीय मान पद्धति का प्रयोग किया, पाई का मान 3.1416 बताया और सिखाया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है; भारत का पहला उपग्रह (1975) उन्हीं के नाम पर था। अर्थशास्त्र के रचयिता चाणक्य (कौटिल्य) पाटलिपुत्र में चंद्रगुप्त मौर्य के मार्गदर्शक और मंत्री थे। जीरादेई के डॉ. राजेंद्र प्रसाद भारत के पहले राष्ट्रपति थे। शहनाई के उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ का जन्म 1916 में बक्सर जिले के डुमराँव में हुआ और उन्हें 2001 में भारत रत्न मिला। सारण के भिखारी ठाकुर ने बिदेसिया नाट्य को प्रसिद्धि दिलाई, भोजपुर के जगजीवन राम उप-प्रधानमंत्री बने, और गया के गहलौर के माउंटेन मैन दशरथ माँझी ने 22 वर्षों में अकेले एक चट्टानी पहाड़ी को काटकर रास्ता बनाया। विद्यापति, दिनकर, रेणु और नागार्जुन जैसे साहित्यकार इस सूची को पूरा करते हैं।

उदाहरण

- बिहार के यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों में महाबोधि मंदिर परिसर, बोधगया (2002) और नालंदा महाविहार का पुरातात्त्विक स्थल (2016) शामिल हैं।
- महाबोधि: पहला मंदिर अशोक ने बनवाया; वर्तमान ईंटों का मंदिर 5वीं-6ठी शताब्दी ई. का; वज्रासन और बोधि वृक्ष; बोधगया मंदिर अधिनियम 1949।
- बराबर गुफाएँ (जहानाबाद): अशोक द्वारा आजीवकों को समर्पित सुदामा गुफा, लकड़ी की वास्तुकला की नकल वाले प्रवेशद्वार सहित लोमस ऋषि गुफा; नागार्जुनी गुफाएँ दशरथ द्वारा; ए पैसेज टू इंडिया की माराबार गुफाओं की प्रेरणा।
- गोलघर, पटना: 1770 के अकाल के बाद 1786 में कैप्टन जॉन गार्स्टिन द्वारा बनवाया गया छत्ते जैसा अन्नागार।
- पटना संग्रहालय (जादूघर) की स्थापना 1917 में हुई; कुम्हरार में 80 स्तंभों वाले मौर्य सभागार के अवशेष हैं; दीदारगंज यक्षी 1917 में पटना में मिली।
- राजगीर: रोपवे सहित विश्व शांति स्तूप (1969), सप्तपर्णी गुफा, गृध्रकूट, साइक्लोपियन दीवार, ब्रह्मकुंड के गर्म जल-स्रोत।
- वैशाली: कोल्हुआ का एकल सिंह-शीर्ष वाला अशोक स्तंभ, अभिषेक पुष्करिणी, अवशेष स्तूप; केसरिया (पूर्वी चंपारण) में विशाल उत्खनित स्तूप।
- आर्यभट: कुसुमपुर में आर्यभटीय (499 ई.); पाई का मान 3.1416; भारत का पहला उपग्रह (1975) उनके नाम पर।
- बिस्मिल्लाह खाँ: 1916 में डुमराँव (बक्सर) में जन्म, शहनाई के उस्ताद, 2001 में भारत रत्न।
- गहलौर (गया) के माउंटेन मैन दशरथ माँझी ने 22 वर्षों में अकेले पहाड़ी काटकर रास्ता बनाया।

> **त्वरित दोहराव:** यूनेस्को: महाबोधि 2002, नालंदा 2016; महाबोधि का पहला मंदिर अशोक द्वारा, ईंटों का मंदिर 5वीं-6ठी शताब्दी, अधिनियम 1949; राजगीर का विश्व शांति स्तूप 1969; कोल्हुआ सिंह स्तंभ, अभिषेक पुष्करिणी; केसरिया स्तूप; बराबर गुफाएँ (आजीवकों के लिए सुदामा, लोमस ऋषि का प्रवेशद्वार); कुम्हरार 80 स्तंभ; गोलघर 1786 (गार्स्टिन); पटना संग्रहालय 1917; सासाराम मकबरा; मुंडेश्वरी मंदिर; आर्यभट 499 ई., पाई 3.1416; बिस्मिल्लाह खाँ डुमराँव 1916, भारत रत्न 2001; दशरथ माँझी 22 वर्ष।

मुफ़्त अभ्यास प्रश्न: parikshasaathi.com/hi/q/bihar-state-gk/

दोहराव पत्रक

हर पाठ का त्वरित दोहराव एक जगह - परीक्षा से पहले की आख़िरी पढ़ाई के लिए।

बिहार सामान्य ज्ञान	मगध की राजधानियाँ राजगृह फिर पाटलिपुत्र (उदयिन); बौद्ध संगीतियाँ राजगीर-वैशाली-पाटलिपुत्र; नालंदा कुमारगुप्त प्रथम, विक्रमशिला धर्मपाल; महावीर निर्वाण पावापुरी; चौसा 1539, सासाराम मकबरा; बिहार प्रांत 22 मार्च 1912, झारखंड 15 नवंबर 2000; चंपारण 1917, राजकुमार शुक्ल; कोसी = बिहार का शोक, बराज हनुमान नगर; गंडक बराज वाल्मीकिनगर; वाल्मीकि एकमात्र बाघ अभयारण्य; कांवर झील बेगूसराय रामसर; विधान सभा 243, परिषद 75, लोक सभा 40, राज्य सभा 16; पटना उच्च न्यायालय 1916; पंचायतों में महिलाओं को 50% 2006; महाबोधि यूनेस्को 2002, नालंदा 2016; मैथिली आठवीं अनुसूची 2003।
प्राचीन बिहार: चिरांद से मगध, नालंदा और पाल वंश तक	चिरांद (सारण) में नवपाषाणकालीन हड्डी के औज़ार; ऋग्वेद में कीकट; विदेघ माथव ने सदानीरा पार की; मिथिला के जनक; महाजनपद अंग (चंपा), मगध (राजगृह), वज्जि (वैशाली, 8 कुल, लिच्छवि); हर्यक-शिशुनाग-नंद-मौर्य; पाटलिपुत्र उदायिन द्वारा; मेगस्थनीज 570 बुर्ज, 64 द्वार; अशोक के समय तृतीय संगीति; कुमारदेवी; महावीर का निर्वाण पावापुरी; नालंदा कुमारगुप्त प्रथम द्वारा; विक्रमशिला धर्मपाल द्वारा।
मध्यकालीन बिहार: बख्तियार खिलजी, शेरशाह सूरी और बक्सर का युद्ध	बख्तियार खिलजी लगभग 1200, ओदंतपुरी, तबकात-ए-नासिरी; बिहार नाम विहार से; मिथिला में कर्नाट वंश (नान्यदेव 1097) और ओइनवार; शरफुद्दीन मनेरी (फिरदौसी) का निधन 1381; शेरशाह: रोहतासगढ़, चौसा 1539, कन्नौज 1540, कालिंजर 1545, सासाराम मकबरा, रुपया, पट्टा-कबूलियत, पटना किला 1541; बिहार सूबा 1580; अज़ीमाबाद 1704; गुरु गोबिंद सिंह का जन्म पटना में 1666; मीर कासिम मुंगेर में; बक्सर 22 अक्टूबर 1764; दीवानी 1765।
आधुनिक बिहार और स्वतंत्रता संग्राम: 1857 से जेपी आंदोलन तक	पीर अली को फाँसी 7 जुलाई 1857; दानापुर विद्रोह 25 जुलाई 1857; जगदीशपुर के कुँवर सिंह का निधन 26 अप्रैल 1858; सादिकपुर के वहाबी, पटना मुकदमा 1865; बिहार और उड़ीसा 22 मार्च 1912; मुज़फ़्फ़रपुर में खुदीराम 1908; चंपारण 1917, राजकुमार शुक्ल, अधिनियम 1918; बिहार विद्यापीठ 6 फरवरी 1921; सहजानंद, किसान सभा 1929/1936; सचिवालय के शहीद 11 अगस्त 1942; राजेंद्र प्रसाद (जीरादेई) राष्ट्रपति 1950-62; जेपी, संपूर्ण क्रांति 5 जून 1974।
बिहार का गठन, विधानमंडल और प्रशासन	बिहार दिवस 22 मार्च (1912); उड़ीसा अलग 1 अप्रैल 1936; पुरुलिया पश्चिम बंगाल को 1956; झारखंड 15 नवंबर 2000; विधानसभा 324 से 243 (38 अनुसूचित जाति, 2 अनुसूचित जनजाति), लोकसभा 54 से 40 (6 अनुसूचित जाति), राज्यसभा 22 से 16; विधान परिषद 75 (अनुच्छेद 171 की सीमाएँ); पटना उच्च न्यायालय 1916; अधिकतम 36 मंत्री (15 प्रतिशत, 91वाँ संशोधन); पहले मुख्यमंत्री श्रीकृष्ण सिन्हा; पंचायत राज अधिनियम 2006, महिलाओं को 50 प्रतिशत, ग्राम कचहरी; राजकीय पक्षी गौरैया, वृक्ष पीपल।
बिहार का भूगोल: स्थिति, सीमाएँ और भौतिक विभाग	24°20'10" उ.-27°31'15" उ., 83°19'50" पू.-88°17'40" पू.; क्षेत्रफल 94,163 वर्ग किमी (2.86 प्रतिशत); उत्तर में नेपाल, पूर्व में पश्चिम बंगाल, दक्षिण में झारखंड, पश्चिम में उत्तर प्रदेश; कर्क रेखा नहीं गुजरती; रक्सौल-बीरगंज, जोगबनी-विराटनगर; शिवालिक पट्टी में सोमेश्वर (सर्वोच्च स्थान) और रामनगर दून; उत्तर बिहार मैदान: चौर, मौन, कोसी का पंख, दियारा; दक्षिणी मैदान: मोकामा-बाढ़ टाल; कैमूर पठार; गर्म जल-स्रोत राजगीर, सीताकुंड; भूकंप 15 जनवरी 1934; जनगणना 2011 घनत्व 1,106, साक्षरता 61.8।
बिहार की नदियाँ, बाढ़ और नदी परियोजनाएँ	गंगा का प्रवेश चौसा में (कर्मनाशा), राष्ट्रीय जलमार्ग 1 (1986); उत्तर से: घाघरा, गंडक (वाल्मीकिनगर से सोनपुर), बूढ़ी गंडक, बागमती, कमला, कोसी (कुरसेला), महानंदा; दक्षिण से: सोन (अमरकंटक, मनेर के निकट संगम), पुनपुन (फतुहा), फल्गु (निरंजना + मोहना), कर्मनाशा, किउल; कोसी = बिहार का शोक, समझौता 1954, कुसहा में तटबंध टूटा 2008; गंडक समझौता 1959; डेहरी एनीकट 1870 का दशक, इंद्रपुरी बराज; राजेंद्र सेतु 1959, गांधी सेतु 1982; कावर झील रामसर स्थल 2020।
बिहार की जलवायु, मिट्टियाँ, वन और वन्यजीव	आर्द्र उपोष्ण मानसूनी जलवायु; मई में लू; अप्रैल-मई में काल बैसाखी; मध्य जून से मानसून; सर्वाधिक वर्षा किशनगंज में; धान के लिए हथिया वर्षा; गंडक-बूढ़ी गंडक मैदान में चूनेदार जलोढ़, गंगा के दक्षिण में टाल की चिकनी मिट्टी और करैल-केवाल, दक्षिणी पहाड़ियों में लाल-पीली मिट्टी; वन दसवें भाग से कम (लक्ष्य एक-तिहाई, नीति 1988); वाल्मीकि राष्ट्रीय उद्यान और बाघ अभयारण्य (प्रोजेक्ट टाइगर 1989-90), चितवन से सटा; विक्रमशिला डॉल्फ़िन अभयारण्य 1991 (सुल्तानगंज-कहलगाँव); डॉल्फ़िन राष्ट्रीय जलीय जीव 2009; कैमूर सबसे बड़ा अभयारण्य।
बिहार की कृषि, उद्योग और भौगोलिक संकेतक (GI) उत्पाद	मौसम भदई, अगहनी, रबी, गरमा; कृषि-जलवायु क्षेत्र I, II, III-A, III-B; धान का कटोरा रोहतास-कैमूर; कोसी-सीमांचल में मक्का; मोकामा टाल में दलहन; GI: शाही लीची, जर्दालु, कतरनी, मगही पान, सिलाव खाजा; मिथिला में मखाना; पूसा संस्थान 1905; बरौनी रिफ़ाइनरी 1964 (सोवियत सहायता); जमालपुर कारखाना 1862; मधेपुरा और मढ़ौरा लोकोमोटिव कारखाने; कहलगाँव और बाढ़ में NTPC; अमझोर में पाइपराइट; भागलपुरी सिल्क, सिक्की, मंजूषा, सुजनी।
बिहार के पर्व, लोक कलाएँ, भाषाएँ और साहित्य	कार्तिक शुक्ल षष्ठी को छठ, 4 दिन, निर्जला व्रत, देव का पश्चिममुखी सूर्य मंदिर; कार्तिक पूर्णिमा को सोनपुर मेला (गंडक-गंगा); श्रावणी मेला सुल्तानगंज से देवघर; गया में पितृपक्ष (विष्णुपद); सामा-चकेवा, जितिया, मधुश्रावणी; जट-जटिन, झिझिया, डोमकच, बिदेसिया (भिखारी ठाकुर); मधुबनी शैलियाँ भरनी, कचनी, गोदना, जगदंबा देवी को पद्मश्री 1975; मैथिली आठवीं अनुसूची में 2003 (तिरहुता); दिनकर उर्वशी 1972; रेणु मैला आँचल 1954; नागार्जुन = यात्री।
बिहार के स्मारक, पर्यटन परिपथ और प्रसिद्ध व्यक्तित्व	यूनेस्को: महाबोधि 2002, नालंदा 2016; महाबोधि का पहला मंदिर अशोक द्वारा, ईंटों का मंदिर 5वीं-6ठी शताब्दी, अधिनियम 1949; राजगीर का विश्व शांति स्तूप 1969; कोल्हुआ सिंह स्तंभ, अभिषेक पुष्करिणी; केसरिया स्तूप; बराबर गुफाएँ (आजीवकों के लिए सुदामा, लोमस ऋषि का प्रवेशद्वार); कुम्हरार 80 स्तंभ; गोलघर 1786 (गार्स्टिन); पटना संग्रहालय 1917; सासाराम मकबरा; मुंडेश्वरी मंदिर; आर्यभट 499 ई., पाई 3.1416; बिस्मिल्लाह खाँ डुमराँव 1916, भारत रत्न 2001; दशरथ माँझी 22 वर्ष।

Pariksha Saathi एक स्वतंत्र परियोजना है और किसी भर्ती संस्था या सरकारी विभाग से संबद्ध नहीं है। हर विषय के नोट्स: parikshasaathi.com/downloads/